



Bete Ko Nasihat (Hindi)

इस्लाहे नफ़्स और फ़िक्रे आख़िरत का जज़्बा बढ़ाने वाली ज़ामेअ तहरीर

أَيُّهَا الْوَلَدُ

तरजमा बनाम

बेटे को नसीहत

मुसनिफ़ : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली ^{عليه السلام}
(अल मु-तवफ़्फ़ा 505 हि.)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि र-जवी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ نَعَالِيَهُ**
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
व बक्कीअ
व मग़फ़रत



13 शवालुल मुकर्रम 1428 हि.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "أَيُّهَا الْوَلَدُ"

हुज्जतुल इस्लाम इमाम अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** ने अ-रबी ज़बान में तहरीर फ़रमाया है । मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने इस का उर्दू तरजमा और तख़रीज कर के "बेटे को नसीहत" के नाम से पेश किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद

के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नफ़्स की इस्लाह और फ़िक्रे आखिरत का जज़्बा बढ़ाने वाली
जामेअ तहरीर

آيَةُ الْوَلَدِ

तरजमा बनाम

बेटे को नसीहत

मुअल्लिफ़ :

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन

मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

मुर्तजिमीन : म-दनी उ-लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

नाम किताब : أَيُّهَا الْوَلَدُ

तरजमा बनाम : बेटे को नसीहत

मुअल्लिफ़ : हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन

मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

मुतर्जिमीन : म-दनी उ-लमा (शो 'बए तराजिमे कुतुब)

इशाअत : दिसम्बर 2017

तस्दीक नामा

तारीख़ : 14 शव्वालुल मुकर्रम 1425 हि. हवाला नम्बर : 163

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين

तस्दीक की जाती है कि किताब “أَيُّهَا الْوَلَدُ” के तरजमा

“बेटे को नसीहत”

(मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिसे ने इसे मतालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक़दूर भर मुला-हज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिसे पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा 'वते इस्लामी)

23-09-2010

फ़ेहरिस्त

मज़मून	सफ़ह	मज़मून	सफ़ह
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	5	फ़िरिश्ते की निदा	26
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या	6	इताअत व इबादत की हकीक़त	27
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	बा'ज़ बातें ज़बान से बयान नहीं हो सकतीं	30
ऐ महब्बत करने वाले		सालिक के लिये ज़रूरी बातें	31
बहुत ही प्यारे बेटे !	11	चार हज़ार अह़ादीस में से सिर्फ़ एक	31
महक्ता महकाता म-दनी फूल	11	30 सालह दौरै तालिबे इल्मी का खुलासा	32
नसीहत किस पर असर नहीं करती ?	12	﴿1﴾..... पहला फ़ाएदा	32
इल्म पर अमल न करने की मिसाल	13	﴿2﴾..... दूसरा फ़ाएदा	33
सिर्फ़ किताबें जम्अ करना फ़ाएदा मन्द नहीं	14	﴿3﴾..... तीसरा फ़ाएदा	33
अमल के मु-तअल्लिक़	5	﴿4﴾..... चौथा फ़ाएदा	34
फ़रामीने बारी तआला	14	﴿5﴾..... पांचवां फ़ाएदा	34
इस्लाम की बुन्याद	15	﴿6﴾..... छठा फ़ाएदा	35
ईमान किसे कहते हैं	15	﴿7﴾..... सातवां फ़ाएदा	35
अल्लाह तआला की रहमत से		﴿8﴾..... आठवां फ़ाएदा	36
क़रीब कौन ?	16	मुर्शिद की अहम्मिय्यत व ज़रूरत	37
रहमतें खुदावन्दी	17	पीरे कामिल का आलिम होना ज़रूरी है	38
झूटी उम्मीद व आस	18	पीरे कामिल के 26 औसाफ़	39
अक़ल मन्द और अहमक़	19	पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी एहतिराम	40
हुसूले इल्म व मुता-लए का मक़सद	19	पीरो मुर्शिद का बातिनी एहतिराम	41
मय्यित से 40 सुवालात	20	बद अक़ीदा लोगों की सोहबत से परहेज़	41
ग़ैर मुफ़ीद और बे फ़ाएदा इल्म	21	तसव्वुफ़ की हकीक़त	41
सआदत मन्द और बद बख़्त	22	बन्दगी की हकीक़त	42
ठन्डा पानी देख कर ग़शी	23	तवक्कुल की हकीक़त	42
सिर्फ़ हुसूले इल्म ही काफ़ी नहीं	24	इख़्लास की हकीक़त	43
अल्लाह तआला की पसन्दीदा आवाज़ें	25	रियाकारी और इस का इलाज	43

इल्म पर अमल की ब-र-कत	43	﴿3﴾..... तीसरी नसीहत	53
आठ अहम म-दनी फूल	45	उ-मरा के तोहफे या शैतान का वार ?	53
जिन 4 बातों से दूरी लाज़िम है	45	﴿4﴾..... चौथी नसीहत	53
﴿1﴾..... पहली नसीहत	45	जिन 4 बातों पर अमल करना है	55
मुनाज़रे की इजाज़त कब है ?	46	अल्लाह तआला से बन्दे का मुआ-मला	55
क़ल्बी अमराज़ में मुब्तला मरीज़	46	﴿5﴾..... पांचवीं नसीहत	55
जाहिल मरीज़ों की 4 अक्साम	47	बन्दों से मुआ-मला	55
(1)..... पहला मरीज़ (हसद का शिकार)	47	﴿6﴾..... छठी नसीहत	55
(2)..... दूसरा मरीज़ (हमाक़्त का शिकार)	48	इल्मो मुता-लए की नौइय्यत	55
(3)..... तीसरा मरीज़		﴿7﴾..... सातवीं नसीहत	55
(कम अक्ली का शिकार)	48	नजात का म-दनी नुस्खा	56
(4)..... चौथा मरीज़		दिलों और निय्यतों पर नज़र	56
(नसीहत का तलब गार)	49	कितना इल्म फ़र्ज़ है	57
वा'ज़ो बयान की हकीक़त	49	हिंस व तमअ से दूरी	58
﴿2﴾ दूसरी नसीहत	49	﴿8﴾..... आठवीं नसीहत	58
वा'ज़ो नसीहत में दो बातों से परहेज़	50	दुआए खास	58
उ-मरा से मेलजोल का नुक्सान	53	मआख़िज़ो मराजेअ	61

ता'रीफ़ और सआदत

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर बैजावी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي** (मु-तवफ़ा 685 हि.) इर्शाद फ़रमाते हैं कि “जो शख्स **اَللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआदत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।”

(तफ़सीर البيضاوی، پ ۲۲، الاحزاب، تحت الاية: ۷۱، ج ۴، ص ۳۸۸)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“नसीहत क़बूल करो” के 12 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 12 नियतें

نَبِيَّةُ الْمُؤْمِنِينَ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या'नी मुसलमान की नियत उस के अमल से बेहतर है।”

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥)

दो म-दनी फूल :

- ﴿1﴾ बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अ-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता ।
 - ﴿2﴾ जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा ।
 - ﴿1﴾ हर बार हम्द व ﴿2﴾ सलात और ﴿3﴾ तअव्वुज व ﴿4﴾ तस्मिया से आगाज़ करूंगा । (इसी सफ़हे पर ऊपर दी हुई दो अ-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा) ।
 - ﴿5﴾ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुता-लअ करूंगा ।
 - ﴿6﴾ हत्तल वस्अ इस का बा वुजू और क़िब्ला रू मुता-लअ करूंगा ।
 - ﴿7﴾ जहां जहां “अल्लाह” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴿8﴾ जहां जहां “सरकार” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पढ़ूंगा ।
 - ﴿9﴾ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा ।
 - ﴿10﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़ज़रूरत खास खास मक़ामात अन्दर लाइन करूंगा ।
 - ﴿11﴾ इस हदीसे पाक “نَهَادُوا تَحَابُّرًا” एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महबबत बढ़ेगी ।” (موطأ امام مالك، ج ٢، ص ٤٠٧، الحديث: ١٧٣١)
 - ﴿12﴾ हस्बे तौफीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा ।
- किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा । (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना खास मुफ़ीद नहीं होता)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ**

तब्लीगे कुरआनो **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى إِحْسَانِهِ وَبِفَضْلِ رَسُولِهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा’वते इस्लामी” नेकी की दा’वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुनिया भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअद्द मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” भी है जो दा’वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तियाने किराम **كَرَّمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्द-र-जए जैल छ⁶ शो’बे हैं :

- | | |
|---|-------------------------|
| (1) शो’बए कुतुबे आ’ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ | (2) शो’बए तराजिमे कुतुब |
| (3) शो’बए दर्सी कुतुब | (4) शो’बए इस्लाही कुतुब |
| (5) शो’बए तफ़्तीशे कुतुब | (6) शो’बए तख़्रीज |

“अल मदीनतुल इल्मिय्या” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल ब-र-कत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत,

माहिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** की गिरां मायह तसानीफ़ को अस्से हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती म-दनी काम में हर मुम्किन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुता-लआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** “दा'वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिय्या” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अ-मले ख़ैर को ज़ेरे इख़लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िर्दौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये !

इल्मे दीन का हुसूल बेशक बहुत बड़ी सआदत और अफ़ज़ल इबादत है कुरआने मजीद फुरकाने हमीद ने अहले इल्म की फ़ज़ीलत में इर्शाद फ़रमाया :

يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أَوْثَرُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ (प २८, महादल: ११)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह
तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को
इल्म दिया गया द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा ।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक
ﷺ का फ़रमाने आलीशान है कि “आलिम की फ़ज़ीलत
आबिद पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना पर ।”(1)

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया : “एक फ़कीह (आलिम) हज़ार
आबिदों से ज़ियादा शैतान पर भारी है ।”(2)

लेकिन इल्म वोही फ़ाएदा मन्द है जिस से नफ़अ उठाया जा सके इस
लिये कि नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम ﷺ ने बे फ़ाएदा इल्म
से अल्लाह ﷻ की पनाह मांगी है । चुनान्चे,

प्यारे मुस्तफ़ा ﷺ यूं दुआ मांगा करते :
“اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ.”
तेरी पनाह मांगता हूँ जो फ़ाएदा न दे ।”(3)

लिहाज़ा वोही इल्म हासिल किया जाए जो दुनिया व आख़िरत में
नाफ़ेअ हो और जिस इल्म से कोई फ़ाएदा न पहुंचे उस से कनारा कशी
इख़्तियार कर ली जाए । हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद

1.....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه، الحديث: ۲۶۹۴، ج ۴، ص ۳۱۴.

2.....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه، الحديث: ۲۶۹۰، ج ۴، ص ۳۱۲.

3.....صحیح مسلم، کتاب الذکرو الدعاء، باب التعوذ من شر، الحديث: ۲۷۲۲، ص ۱۴۵۷.

बिन मुहम्मद गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** से इन के एक शागिर्द ने इस बारे में मक्तूब के ज़रीए इस्तिफ़सार किया और साथ में कुछ नसीहतों का भी तालिब हुवा। चुनान्वे आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने जवाबन रिसाला नुमा मक्तूब तहरीर फ़रमाया जो **“أَيُّهَا الْوَلَدُ”** के नाम से मशहूर हुवा। इस मक्तूब में हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** ने एक शफ़ीक़ बाप की तरह अपने रूहानी बेटे को नसीहतें इर्शाद फ़रमाई हैं। आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का येह मुख़्तसर मक्तूब गोया तसव्वुफ़ का मुख़्तसर व जामेअ निसाब है। कामिल तवज्जोह के साथ इस का पढ़ना बल्कि बार बार पढ़ने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होगा। हज़रते सय्यिदुना इमाम गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** का लिखा हुवा एक एक जुम्ला तासीर का तीर बन कर दिल में उतरता महसूस होगा।

काम्याबी व नजात हासिल करने के लिये हज़रते सय्यिदुना इमाम गज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** ने तज्कियए नफ़्स और इस्लाहे आ'माल पर काफ़ी ज़ोर दिया है और मुर्शिदे कामिल की ज़रूरत को इस के लिये लाज़िमी क़रार दिया है। जब कि सिर्फ़ हुसूले इल्म ही को सब कुछ समझ लेने वालों को सख़्त तम्बीह फ़रमाई है। म-सलन इस मल्फूज़ पर ग़ौर फ़रमाएं तो दिल की कैफ़िय्यात बदलती नज़र आएंगी। चुनान्वे,

इर्शाद फ़रमाया : “जो इल्म आज तुझे गुनाहों से दूर नहीं कर सका और **अल्लाह** तआला की इताअत व इबादत का शौक़ पैदा न कर सका तो याद रख येह कल क़ियामत में तुझे जहन्नम की आग से भी न बचा सकेगा।”

लिहाज़ा हर मुसल्मान को खुसूसन त-लबा को चाहिये अव्वल ता आख़िर येह रिसाला मुकम्मल पढ़ लें। मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ने शो'बए तराजिमे कुतुब को इस के उर्दू तरजमे की ज़िम्मेदारी सोंपी। **الْحَمْدُ لِلَّهِ !** इस का उर्दू तरजमा बनाम **“बेटे को नसीहत”** आप के हाथों में है। इस तरजमे में जो भी खूबियां हैं वोह यकीनन **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस के **प्यारे हबीब** **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की अताओं, **औलियाए किराम** **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام** की

इनायतों और शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** की पुर खुलूस दुआओं का नतीजा है और जो खामियां हैं उन में हमारी कोताह फ़हमी का दख़ल है।

तरजमे के लिये दारुल फ़िक्क बैरूत का नुस्खा (मत्बूआ 1424 हि. / 2003 ई.) इस्ति 'माल किया गया है और तरजमा करते हुए इन उमूर का ख़ास ख़याल रखा गया है :

☆..... सलीस और बा मुहा-वरा तरजमा किया गया ताकि कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई भी समझ सकें।

☆..... आयाते मुबा-रका का तरजमा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** के तर-ज-मए कुरआन "कन्ज़ुल ईमान" से लिया गया है।

☆..... आयाते मुबा-रका के हवाले का भी एहतियाम किया गया है और हत्तल मक़दूर अहदादीसे तय्यिबा व वाकिआत की तख़्तीज भी की गई है।

☆..... बा'ज मक़ामात पर हवाशी मअत्तख़ीज का इल्तिज़ाम किया गया है।

☆..... मौक़अ की मुना-स-बत से जगह ब जगह उन्वानात काइम किये गए हैं।

☆..... नीज़ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मअानी हिलालैन (.....) में लिखने का एहतियाम किया गया है।

☆..... अलामाते तरकीम (रुमूजे औकाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआ है कि हमें "अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश" करने के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल और म-दनी काफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं और रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शो 'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ऐ महबबत करने वाले बहुत ही प्यारे बेटे !

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें अपनी इताअत में लम्बी उम्र अता फरमाए और अपने प्यारों के रास्ते पर चलना नसीब फरमाए । यह बात ज़ेहन नशीन कर लो !

नसीहत के महक्ते फूल तो सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की अहादीस व सुन्नत से हासिल होते हैं । अगर तुम्हें रसूले अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह से फैज़ाने नसीहत हासिल हो चुका है तो फिर मेरी किसी नसीहत की ज़रूरत नहीं और अगर बारगाहे मुस्तफ़ा से नसीहत नहीं पहुंची तो यह बताओ तुम ने गुज़रे अय्याम में क्या हासिल किया ?

महक्ता महकाता म-दनी फूल

ऐ प्यारे बेटे !

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अपनी उम्मत को जो नसीहतें इर्शाद फरमाई उन में से एक महक्ता म-दनी फूल यह है : “ **عَلَامَةُ إِعْرَاضِ اللَّهِ تَعَالَى عَنِ الْعَبْدِ إِشْتِغَالُهُ بِمَا لَا يَنْبَغِيهِ وَإِنَّ أَمْرًا فَهِبَتْ سَاعَةٌ** ” **مِنْ عُمْرِهِ فِي غَيْرِ مَا خُلِقَ لَهُ لَجْدِيذٌ أَنْ تَطُولَ عَلَيْهِ حَسْرَتُهُ وَمَنْ جَاوَزَ الْأَدْبُعِينَ وَلَمْ يُغْلِبْ** ” या'नी : बन्दे का ग़ैर मुफ़ीद कामों में मशगूल होना इस बात की अ़लामत है कि **अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ**** ने उस से अपनी नज़रे इनायत फेर ली है और जिस मक़सद के लिये बन्दे को पैदा किया गया है अगर उस की ज़िन्दगी का एक लम्हा भी उस के इलावा गुज़र गया तो वोह इस बात का हक़दार है कि उस की हसरत तवील हो जाए और जिस की उम्र **40** साल से ज़ियादा हो जाए और इस के बा वुजूद उस की बुराइयों पर उस की अच्छाइयां

ग़ालिब न हों तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये।”(1)

समझदार और अक्ल मन्द के लिये इतनी ही नसीहत काफ़ी है।

नसीहत किस पर असर नहीं करती ?

ऐ लख्ते जिगर !

नसीहत करना तो बहुत आसान है..... मगर उस को क़बूल करना (या'नी उस पर अमल करना) बहुत ही मुश्किल है..... क्यूं कि जिन लोगों के दिलों में दुनियावी लज़्ज़ात और नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़-लबा हो, उन को नसीहत व भलाई की बातें कड़वी लगती हैं..... बिल खुसूस उस रस्मी तालिबे इल्म को नसीहत ज़ियादा कड़वी लगती है जो अपनी वाह वाह चाहने और दुनियावी शोहरत के हुसूल में मगन हो..... क्यूं कि वोह इस गुमाने फ़ासिद में मुब्तला होता है कि “इसे काम्याबी और आख़िरत में नजात के लिये सिर्फ़ इल्म ही काफ़ी है और अमल की कोई ज़रूरत नहीं” हालां कि येह तो फ़ल्सफ़ियों का न-ज़रिय्या है..... और येह शख्स इतना भी नहीं जानता कि इल्म हासिल करने के बा'द उस पर अमल न करना आख़िरत में शदीद पकड़ का बाइस होगा। जैसा कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने इब्रत निशान है : “**اَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَالِمٌ لَا يَنْفَعُهُ اللّٰهُ بِعِلْمِهِ**” या'नी : क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अज़ाब उस आलिम को होगा जिसे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने उस के इल्म के सबब कोई फ़ाएदा न पहुंचाया।”(2)

सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي** को बा'दे विसाल किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : “ऐ अबुल क़ासिम ! कुछ इर्शाद फ़रमाइये (बा'दे वफ़ात क्या बीती ?)।” फ़रमाया : “इल्मी

1.....تفسير روح البيان، سورة بقره، تحت الآية: ٢٣٢، ج ١، ص ٣٦٣.

2.....شعب الايمان للبيهقي، باب في نشر العلم، الحديث: ١٧٧٨، ج ٢، ص ٢٨٥.

अब्दास और इल्मी निकात की बारीकियां काम न आईं मगर रात (की तन्हाई) में अदा की जाने वाली चन्द रक्अतों ने ख़ूब फ़ाएदा पहुंचाया ।”

इल्म पर अमल न करने की मिसाल

ऐ नूरे नज़र !

नेक आ'माल और बातिनी कमालात से ख़ाली न रहना (बल्कि ज़हिरो बातिन को अख़्लाके ह-सना से मुजय्यन व आरास्ता करना)..... और यकीन रखो कि (अमल के बिगैर) सिर्फ़ इल्म ही (बरोजे हशर) तेरे काम न आएगा..... जैसा कि एक शख्स जंगल में हो और उस के पास दीगर हथियारों के इलावा 10 हिन्दी तलवारें भी हों..... और वोह उन को इस्ति'माल करने में महारत भी रखता हो..... साथ ही साथ वोह बहादुर भी हो..... ऐसे में अचानक एक मुहीब और खौफ़नाक शेर उस पर हम्ला कर दे..... तो तुम्हारा क्या ख़याल है कि इस्ति'माल किये बिगैर सिर्फ़ उन हथियारों की मौजू-दगी उसे इस मुसीबत से बचा सकती है ?..... यकीनन तुम अच्छी तरह जानते हो कि उन हथियारों को इस्ति'माल में लाए बिगैर इस हमले से नहीं बचा जा सकता..... पस याद रखो कि अगर कोई शख्स एक लाख इल्मी मसाइल पढ़ कर उन को अच्छी तरह जान ले मगर अमल न करे तो वोह मसाइल उसे कुछ नफ़अ न देंगे..... इस बात को यूं भी समझा जा सकता है कि अगर कोई शख्स बीमार हो..... उसे गरमी और सफ़रा (एक किस्म का मरज़) की शिकायत हो और उसे मा'लूम हो कि इस का इलाज सिकन्ज बीन (सिका या नीबू के अरक का पका हुवा शरबत) और कश्काब (जव का पानी) के इस्ति'माल करने में है तो इन्हें इस्ति'माल किये बिगैर (सिर्फ़ इन की मौजू-दगी से) उस का मरज़ किस तरह ख़त्म हो सकता है ?



सिर्फ किताबें जम्अ करना फ़ाएदा मन्द नहीं

प्यारे बेटे !

अगर तुम 100 साल तक हुसूले इल्म में मसरूफ़ रहो और एक हजार किताबें जम्अ कर लो तब भी अमल के बिगैर अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत के मुस्तहिक् नहीं बन सकते ।

अमल के मु-तअल्लिक 5 फ़रामीने बारी तअाला :

﴿1﴾

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَى ۚ
(प २७, النّهم: ३९)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और यह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश ।

﴿2﴾

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ
عَمَلًا صَالِحًا (प १६, الکھف: ११०)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे ।

﴿3﴾

جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ
(प १०, التوبه: ८२)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बदला उस का जो कमाते थे ।

﴿4﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۚ
خَالِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ۚ
(प १६, الکھف: १०७, १०८)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फिरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से जगह बदलना न चाहेंगे ।

﴿5﴾

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मगर जो
 إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
 तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा
 काम करे ।
 (प १९, الفرقान: ७०)

इस्लाम की बुन्याद

और मज़कूरा आयाते मुबा-रका के इलावा इस हदीसे पाक के
 बारे में तुम क्या कहते हो ? (क्या अब भी तुझे अमल की तरगीब नहीं
 मिलेगी ?)

بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَ
 يَا'नी : इस्लाम की बुन्याद
 5 चीजों पर है । इस बात की गवाही देना कि अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई
 मा'बूद नहीं और हज़रत मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अल्लाह (**عَزَّوَجَلَّ**)
 के रसूल हैं । नमाज़ काइम करना । ज़कात अदा करना । र-मज़ान के रोज़े
 रखना और जिसे इस्तिताअत हो उस का बैतुल्लाह का हज़ करना ।⁽¹⁾

ईमान किसे कहते हैं

يَا'नी : ईमान ज़बान
 से इक़ार, दिल से तस्दीक और अरकाने (इस्लाम) पर अमल करने का नाम
 है ।⁽²⁾

1..... صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب دعاؤكم ايمانكم، الحديث: ٨٠، ج ١، ص ٤١.

2..... शारेहे बुखारी फकीहे आ'जमे हिन्द हज़रते अल्लामा मुफ्ती शरीफुल हक़ अमजदी
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की तहरीर का खुलासा है : ईमान के सिलसिले में कसरी इख़िलाफ़त हैं ।
 आ'माल व अक्वाल ईमान के जुज़ हैं या नहीं ? (हज़रते सय्यिदुना) इमाम मालिक, इमाम
 शाफ़ेई, इमाम अहमद बिन हम्बल और जम्हूर मुहद्दिसीन (رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين) आ'माल व अक्वाल
 को ईमान का जुज़ मानते हैं और (हज़रते सय्यिदुना) इमाम आ'जम व जम्हूर मु-तकल्लिमीन
 व मुहक्किनी मुहद्दिसीन (رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْمُبِين) आ'माल व अक्वाल को ईमान का जुज़ नहीं
 मानते । सहीह व राजेह येही है कि आ'माल व अक्वाल ईमान के जुज़ नहीं ।
 (نزهة القارى شرح صحيح البخارى، ج ١، ص ٢٣٦، ملخصاً)
 के इसी मक़ाम का मुता-लआ फ़रमा लीजिये । नीज़ मक-त-बतुल मदीना की...

अल्लाह तआला की रहमत से करीब कौन ?

नेक आ'माल की अहम्मियत और फ़ज़ीलत के मु-तअल्लिक (कुरआनो हदीस में मौजूद) दलाइल को शुमार नहीं किया जा सकता.....

अगर बन्दा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के फ़ज़लो करम से जन्नत तक पहुंच गया तो येह उस के इत्ताअत व इबादत बजा लाने के बा'द होगा..... क्यूं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत उस के नेक बन्दों के करीब होती है ।

और अगर येह कहा जाए कि बन्दे का साहिबे ईमान होना ही जन्नत में दाखिले के लिये काफी है..... (और अमल की ज़रूरत नहीं) तो हम कहेंगे कि आप का कहना दुरुस्त है..... मगर इसे जन्नत में जाना कब नसीब होगा ?..... वहां तक पहुंचने के लिये काफी दुश्वार गुज़ार घाटियों और पुरखार वादियों का सामना करना पड़ेगा..... सब से पहला मरहला तो ईमान की घाटी से ब हिफ़ाज़त गुज़रना है..... क्या ख़बर बन्दा ईमान सलामत ले जाने में काम्याब होता भी है या

... मत्बूआ **612** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” के सफ़हा **39** ता **40** पर क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत, शैख़े तरीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अन्तार कादिरि र-जव्वी** **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** तहरीर फ़रमाते हैं : ईमान लुग़त में तस्दीक़ करने (या'नी सच्चा मानने) को कहते हैं । (تفسير قرطبي، ج ١، ص ١٤٧) ईमान का दूसरा लुग़वी मा'ना है : अम्न देना । चूँकि मोमिन अच्छे अक़ीदे इख़्तियार कर के अपने आप को दाइमी या'नी हमेशा वाले अज़ाब से अम्न दे देता है इस लिये अच्छे अक़ीदों के इख़्तियार करने को ईमान कहते हैं । (तफ़सीरे नईमी, जि. 1, स. 8) और इस्तिलाहे शर-अ में ईमान के मा'ना हैं : “सच्चे दिल से इन सब बातों की तस्दीक़ करे जो ज़रूरिय्याते दीन से हैं ।” (माखूज अज़ बहारे शरीअत, हिस्सा : 1, स. 92) और आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़रमाते हैं : मुहम्मदुरसूलुल्लाह **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को हर बात में सच्चा जाने । हुजूर की हक्कानिय्यत को सिद्क़ दिल से मानना ईमान है जो इस का मुक़िर (या'नी इक़्ार करने वाला) हो उसे मुसल्मान जानेंगे जब कि उस के किसी कौल या फ़े'ल या हाल में **अल्लाह** व रसूल (**عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**) का इन्कार या तक्ज़ीब (या'नी झुटलाना) या तौहीन न पाई जाए ।

(फ़तावा र-जव्विय्या, जि. 29, स. 254, रज़ा फ़ाउन्डेशन लाहोर)

नहीं ?⁽¹⁾..... (अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** हमारा ईमान सलामत रखे । आमीन).....
और अगर (काम्याब हो कर) जन्नत में दाखिल हो भी गया तो फिर भी मुफ़्लिस जन्नती होगा..... चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى** फ़रमाते हैं कि
अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** क़ियामत के दिन इर्शाद फ़रमाएगा : “ऐ मेरे बन्दो ! मेरी
रहमत से जन्नत में दाखिल हो जाओ और इसे अपने आ'माल के
मुताबिक़ तक्सीम कर लो ।”

रहमते ख़ुदावन्दी

ऐ लख्ते जिगर !

अमल करोगे तो अज़्रो सवाब पाओगे..... मन्कूल है कि बनी
इसराईल के एक आबिद ने 70 साल तक अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत की ।
रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** ने उस की शानो अज़मत फ़िरिशतों पर ज़ाहिर करने का
इरादा फ़रमाया तो उस की तरफ़ एक फ़िरिश्ता भेजा ताकि उसे येह बताए
कि इस क़दर ज़ोहदो इबादत के बा वुजूद वोह जन्नत का मुस्तहिक् नहीं ।
चुनान्चे, फ़िरिश्ते ने अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का पैग़ाम पहुंचाया तो उस नेक शख़्स
ने जवाब दिया : “हमें तो इबादत के लिये पैदा किया गया है इस लिये
हमें इबादत ही करना चाहिये ।” (अब येह ख़ालिको मालिक **عَزَّوَجَلَّ** की
मरज़ी है कि महूज़ अपने करम से दाखिले जन्नत फ़रमा दे या अद्ल करते हुए
जहन्नम में झोंक दे) जब फ़िरिश्ता रब्बे काएनात **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाहे इज़ज़त
में हाज़िर हुवा तो अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने पूछा : “मेरे बन्दे ने क्या जवाब

1..... ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनाने की खातिर मक-त-बतुल
मदीना की मत्बूआ 472 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब “बयानाते अत्तारिया” में शामिल
रिसाला “बुरे ख़ातिमे के अस्बाब” सफ़्हा 107 ता 146 का मुता-लआ फ़रमा लीजिये ।

दिया ?” अर्ज की : “ऐ तमाम जहानों के परवर दगार ! तू अपने बन्दों के जवाब को खूब जानता है ।” तो **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** ने इर्शाद फ़रमाया : “जब मेरा बन्दा मेरी इबादत से जी नहीं चुराता तो मेरी शाने करीमी का तकाज़ा है कि मैं भी उस से नज़रे रहमत न फेरूं । ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह रहो ! मैं ने उस की मग़िफ़रत फ़रमा दी ।”

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हुजुरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम का फ़रमाने आलीशान है :

“حَاسِبُواْ اَنْفُسَكُمْ قَبْلَ اَنْ تُحَاسِبُوْا وَاَنْتُمْ اَعْمَالُكُمْ قَبْلَ اَنْ تُوزَنُوْا” या’नी : इस से पहले कि तुम्हारा हिसाब हो अपना हिसाब खुद कर लो और अपने आ’माल का वज़्न कर लो क़ब्ल इस के कि इन्हें तोला जाए ।”(1)

झूटी उम्मीद व आस

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم** इर्शाद फ़रमाते हैं : “जो शख्स येह गुमान रखता है कि नेक आ’माल अपनाए बिगैर जन्नत में दाख़िल होगा वोह झूटी उम्मीद व आस का शिकार है और जिस ने येह ख़याल किया कि नेक आ’माल की भरपूर कोशिश से ही जन्नत में दाख़िल होगा तो गोया वोह खुद को **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से मुस्तग़नी व बे परवा समझ बैठा है ।”(2)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : “अच्छे आ’माल के बिगैर जन्नत की त़लब गुनाह से कम नहीं ।”(3)

और आप **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** का ही इर्शादे गिरामी है कि “हकीकी

1..... سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب (ت ٩٠)، الحديث: ٢٤٦٧، ج ٤، ص ٢٠٨.

2..... تفسیر روح البیان، سورۃ بقرۃ، تحت الایۃ: ٢٤٦، ج ١، ص ٣٨٣.

3..... تفسیر روح البیان، سورۃ رعد، تحت الایۃ: ٢٤٦، ج ٤، ص ٣٨٨.

बन्दगी की अलामत यह है कि बन्दा अमल न छोड़े बल्कि अमल को अच्छा समझना छोड़ दे।”

अक्ल मन्द और अहमक

सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने आलीशान है :

“الْكَيْسُ مَنْ دَانَ نَفْسَهُ وَعَمِلَ لِمَا بَعْدَ الْمَوْتِ وَالْأَحْمَقُ مَنْ اتَّبَعَ نَفْسَهُ هَوَاهَا وَتَمَنَّى عَلَى اللَّهِ”
या’नी अक्ल मन्द और समझदार वोह है जो अपने नफ़्स का मुहा-सबा करे और मौत के बा’द वाली ज़िन्दगी के लिये अमल करे और अहमक व नादान वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिशात की पैरवी करे और (नफ़्सानी ख़्वाहिशात व मम्नूआत को तर्क किये बिगैर) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से अफ़वो दर गुज़र और जन्नत की उम्मीद रखे।”(1)

हुसूले इल्म व मुता-लए का मक़सद

ऐ प्यारे बेटे !

तुम कितनी ही रातें जाग कर हुसूले इल्म में मशगूल व मसरूफ़ रहे..... और (इस कुतुब बीनी के शौक में) अपने ऊपर नींद को हराम किये रखा..... मैं नहीं जानता कि तुम्हारी इस मेहनतो मशक़त का सबब क्या था ?..... अगर तुम्हारी निय्यत दुन्यवी साजो सामान और मालो दौलत हासिल करने की थी तो (कान खोल कर सुन लो !) तुम्हारे लिये हलाकत व बरबादी है..... और अगर उन शब बेदारियों में तुम्हारी निय्यत येह थी कि तुम **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की प्यारी प्यारी शरीअत का पैग़ाम आम करोगे..... अपने किरदार व अख़लाक को सुन्नतों के सांचे में ढालोगे..... और

1..... سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب (ت ۹۰)، الحديث: ۲۴۶۷، ج ۴، ص ۲۰۸.

हमेशा बुराई की तरफ बुलाने वाले नफ़से अम्मारा की शरारतों से बचने की भरपूर कोशिश करोगे तो तुम्हें मुबारक हो..... और सआदत मन्दी नसीब हो ।

किसी शाइर ने सच ही कहा है :

سَهْرُ الْعُيُونِ لَغَيْرِ وَجْهِكَ ضَائِعٌ وَبُكَاءُ هُنَّ لَغَيْرِ فِدْكَ بَاطِلٌ

तरजमा : तेरे रुखे जैबा के दीदार के इलावा किसी गैर के लिये इन आंखों का जागते रहना बेकार है और तेरे इलावा किसी और के फ़िराक़ में इन का रोना बातिल व अ़बस है ।

ऐ नूरे नज़र !

عِشْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ مَيِّتٌ وَأَحِبِّ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ مُفَارِقُهُ وَأَعْمَلْ مَا شِئْتَ فَإِنَّكَ تُجْزَى بِهِ
या'नी : जैसे चाहे ज़िन्दगी गुज़ारो आखिरे कार तुम्हें मरना है..... जिस से चाहो महब्बत करो एक न एक दिन तुम उस से जुदा हो जाओगे..... और जैसा चाहे अ़मल करो बिल आखिर इस का बदला ज़रूर दिये जाओगे ।

ऐ लख्ते जिगर !

इल्मे कलाम व मुना-ज़रा, इल्मे तिब, इल्मे दवावीन व अशआर, इल्मे नुजूम व उरूज़, इल्मे नहूव व सर्फ़ (जिन के हासिल करने का मक़सद अगर दुन्यवी शोहरत का हुसूल और लोगों पर अपनी बड़ाई व बर-तरी का इज़हार था) तो सिवाए **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नाराज़ी में अपनी उम्र का कीमती वक़्त ज़ाएअ करने के तेरे हाथ क्या आया ?

मथ्यित से 40 सुवालात

मैं ने इन्जीले मुक़द्दस में येह लिखा हुवा पाया कि हज़रते सय्यिदुना ईसा **عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इर्शाद फ़रमाया : मथ्यित को चारपाई पर रख कर क़ब्र तक लाने के दौरान **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मथ्यित से **40** सुवालात करता है..... इन में से पहला सुवाल येह होता है : “ऐ मेरे बन्दे ! लोगों

को हसीनो जमील नज़र आने के लिये बरसों तू खुद को संवारता रहा लेकिन जिस चीज़ (या'नी दिल) पर मेरी नज़र (रहमत) होती है उसे तूने एक लम्हा भी पाको साफ़ न किया ।”

(ऐ इन्सान !) हर रोज़ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तेरे दिल पर नज़रे करम फ़रमाता है और इर्शाद फ़रमाता है : “तू मेरे ग़ैर की खातिर क्या कुछ कर गुज़रता है..... हालां कि तुझे मेरी ने'मतों ने घेर रखा है (फिर भी मेरी फ़रमां बरदारी की तरफ़ माइल नहीं होता ?)..... क्या तू बहरा हो चुका है ?..... क्या तुझे कुछ सुनाई नहीं देता ?”

ग़ैर मुफ़ीद और बे फ़ाएदा इल्म

ऐ प्यारे बेटे !

अमल के बिग़ैर इल्म पागल पन और दीवानगी से कम नहीं और इल्म के बिग़ैर अमल की कुछ हैसियत नहीं⁽¹⁾ ।..... (इस बात को गिरह

1..... बिग़ैर इल्म के न सिर्फ़ येह कि इबादात उमूमन दुरुस्त तरीक़े पर अदा होने से रह जाती हैं बल्कि बसा अवकात बन्दा सख़्त गुनहगार होता है । दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्वूआ 651 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत” सफ़हा 355 पर मुजहिदे आ'ज़म, इमामे अहले सुन्नत, हज़रते सय्यिदुना आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** (मु-तवफ़्फ़ा 1340 हि.) फ़रमाते हैं : “हदीस में इर्शाद हुवा : **الْمُتَعَمِّدُ بِغَيْرِ فِقْهِ كَالْجَمَارِ فِي الطَّاخُونِ** (बिग़ैर फ़िक्ह के आबिद बनने वाला ऐसा है जैसे चक्की में गधा) । **كُنْزُ الْعَمَالِ، كِتَابُ الْعِلْمِ، الْبَابُ الْأَوَّلُ فِي التَّرْغِيبِ فِيهِ، الْحَدِيثُ: ٥٠٥، ج ٥،** (الحزء العاشر، ص ٦١) बिग़ैर फ़िक्ह के आबिद बनने वाला (फ़रमाया), आबिद न फ़रमाया बल्कि आबिद बनने वाला फ़रमाया या'नी बिग़ैर फ़िक्ह के इबादत हो ही नहीं सकती, जो (बिग़ैर फ़िक्ह के) आबिद बनता है वोह ऐसा है जैसे चक्की में गधा कि मेहनते शाक़ा करे और हासिल कुछ नहीं ।”

नीज़ फ़कीहे मिल्लत, हज़रते अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدَى** (मु-तवफ़्फ़ा 1421 हि.) इस हदीसे पाक के तहत यूं तहरीर फ़रमाते हैं : “मत्लब येह है कि जैसे पहले ज़माने में आटा की चक्की को गधा चलाया करता था मगर आटा खाने के लिये उस को नहीं मिलता था ऐसे ही बिग़ैर फ़िक्ह या'नी मसाइले शरइय्या की रिआयत के बिग़ैर जो इबादत की मशक्क़त उठाता है उसे कुछ सवाब नहीं मिलता ।”

(इल्म और इ-लमा, स. 58)

से बांध लो ! कि) जो इल्म आज तुम्हें गुनाहों से दूर कर सका न अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत (व इबादत) का शौक पैदा कर सका येह कल क़ियामत में तुम्हें जहन्नम की (भड़क्ती हुई) आग से भी नहीं बचा सकेगा..... अगर आज तुम ने नेक अमल न किया और (सुन्नतों को अपना कर) गुज़रे हुए वक़्त का तदारुक न किया, तो कल क़ियामत में तुम्हारी एक ही पुकार होगी :

فَارْجِعْنَا عَمَلَنَا صَالِحًا (प २१, السّجّده: १२) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हमें फिर भेज कि नेक अमल करें ।

तो तुझे जवाब दिया जाएगा : “ऐ अहमक़ व नादान ! तू वहीं से तो आ रहा है ।”

ऐ लख्ते जिगर !

रूह में हिम्मत पैदा करो..... नफ़्स के खिलाफ़ जिहाद करो..... और मौत को अपने क़रीब तर जान..... क्यूं कि तुम्हारी मन्ज़िल क़ब्र है..... और क़ब्रिस्तान वाले हर लम्हा तुम्हारे इन्तिज़ार में हैं कि तुम कब इन के पास पहुंचोगे ?..... ख़बरदार ! ख़बरदार ! बिगैर जादे राह के उन के पास जाने से डरो ।

सआदत मन्द और बद बख़्त

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** इर्शाद फ़रमाते हैं : “येह जिस्म परिन्दों (या’नी ऐसी सआदत मन्द रूहों) के लिये पिंजरे हैं (जो हर लम्हा आलमे बाला की जानिब परवाज़ के लिये बेताब रहती हैं) या येह जिस्म जानवरों (या’नी ऐसी रूहों) के लिये अस्तबल हैं (जो नेक आ’माल से दूर हैं) ।”

पस अपनी जात में ग़ौर करो कि इन दोनों में से तुम्हारा तअल्लुक

किस के साथ है ?..... अगर तुम अलमे बाला की जानिब परवाज़ के लिये बेताब परिन्दों में से हो तो जब (मौत के वक़्त) येह मस्हूर व खुश कुन आवाज़ सुनो :

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब **اُرْجِعْنِي إِلَىٰ رَبِّكَ** (प ३०, الفجر: २८) की तरफ़ वापस हो ।

तो फ़ौरन बुलन्दियों की तरफ़ परवाज़ करते हुए जन्नत के आ'ला मक़ाम पर जा पहुंचना । चुनान्चे,

रहमते आ-लमिय्यान, सरदारे दो जहान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अलीशान है : “**إِهْتَزَّ عَرْشُ الرَّحْمَنِ لِمَوْتِ سَعْدِ بْنِ مُعَاذٍ**” या'नी सा'द बिन मुआज़ की मौत से अशें रहमान (फ़रहत व शादमानी से) झूम उठा ।”^(१)

और **مَعَاذَ اللَّهِ** अगर तुम्हारा शुमार जानवरों में हो जैसा कि फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह **أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ** (प ९, الاعراف: १७९) चोपायों की तरह हैं बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह ।

तो ऐसी सूरत में इस दुन्या से सीधा जहन्नम की आग में जाने से बे ख़ौफ़ न होना ।”

ठन्डा पानी देख कर ग़शी

एक मर्तबा हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** की ख़िदमत में ठन्डा पानी पेश किया गया । पियाला हाथ में लेते ही आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ** पर ग़शी तारी हो गई और पियाला दस्ते मुबारक से नीचे गिर गया । जब कुछ देर बा'द इफ़ाका हुवा तो लोगों ने पूछा : “ऐ अबू

1..... صحيح البخارى، كتاب مناقب الانصار، باب مناقب سعد بن معاذ، الحديث: ३८०३، ج २، ص ५६०.

सईद ! आप को क्या हो गया था ?” फ़रमाया : “मुझे दो ज़ख़् वालों की वोह इल्तिजाएं याद आ गईं जो वोह जन्नत वालों से करेंगे :

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि हमें
 أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ط (प ८, अعرाफ: ५०)
 अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने का जो अल्लाह ने तुम्हें दिया ।⁽¹⁾

सिर्फ़ हुसूले इल्म ही काफ़ी नहीं

ऐ प्यारे बेटे !

अगर सिर्फ़ इल्म हासिल करना ही काफ़ी होता और इस पर अमल की ज़रूरत न होती तो सुब्हे सादिक् के वक़्त मुनादी का येह ए’लान बे फ़ाएदा होता : “هَلْ مِنْ سَائِلٍ هَلْ مِنْ تَائِبٍ؟ هَلْ مِنْ مُسْتَغْفِرٍ؟” या’नी है कोई अपनी हाज़त त़लब करने वाला ? है कोई तौबा करने वाला ? है कोई गुनाहों से मुआफ़ी चाहने वाला ?”⁽²⁾

एक मर्तबा चन्द सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ ने रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का तज़िकरा किया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : “يَعْمَرُ الرَّجُلُ عَبْدُ اللّٰهِ لَوْ كَانَ يُصَلِّي بِاللَّيْلِ-” या’नी अब्दुल्लाह एक अच्छा शख्स है, क्या ही अच्छा होता कि वोह तहज्जुद भी अदा करता ।”⁽³⁾

और एक बार ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किसी सहाबी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इर्शाद फ़रमाया :

1.....حلیۃ الاولیاء، سلام بن ابی مطیع، الرقم: ۸۳۰۱، ج ۶، ص ۲۰۳.

2.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحديث: ۱۱۲۹۵، ج ۴، ص ۶۹.

3.....صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عبد الله بن عمر، الحديث: ۲۴۷۹، ص ۱۳۴۶.

रात : يا'नी لَا تُكْثِرِ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَإِنَّ كَثْرَةَ النَّوْمِ بِاللَّيْلِ تَدْعُ صَاحِبَهُ فَقِيرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ“
को ज़ियादा न सोया करो क्यूं कि शब भर सोने वाला (नफ़ली इबादात न करने के बाइस) बरोजे क़ियामत (नेकियों के सिल्सिले में) फ़कीर होगा।”(1)

ऐ नूरे नज़र !

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का यह फ़रमाने आलीशान :

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : وَمِنَ اللَّيْلِ فَهَيِّؤْهُ (प १०५, بنی اسرائیل: ७९)
और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद करो।..... यह उस का हुक्म है। और यह

फ़रमान : **وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ** (प २६, الذاریات: १८)
कन्ज़ुल ईमान : और पिछली रात इस्तिफ़ार करते।..... उस का शुक्र है।
(या'नी कबूलिय्यते तौबा की दलील है)

और यह जो फ़रमाया गया : **وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ** (प ३, آل عمران: १७)
तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पिछले पहर से मुआफ़ी मांगने वाले।
..... यह (अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से मग़िफ़रत त़लब करने वालों का) ज़िक्र है।

अल्लाह तआला की पसन्दीदा आवाज़ें

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक
ثَلَاثَةُ أَصْوَاتٍ يُحِبُّهَا اللَّهُ تَعَالَى का फ़रमाने दिल नशीन है : “
صَوْتُ الدِّيْنِ وَصَوْتُ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَصَوْتُ الْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ
يا'नी : अल्लाह
को तीन आवाज़ें पसन्द हैं : (1)..... मुर्ग़ की आवाज़ (जो सुब्ह नमाज़ के लिये जगाती है) (2)..... तिलावते कुरआने पाक की आवाज़ और (3).....
सुब्ह सवेरे अपने गुनाहों से मुआफ़ी त़लब करने वाले की आवाज़।”(2)

1..... شعب الايمان للبيهقي، باب في تعديد نعم الله وشكرها، فصل في النوم وآدابه،

الحديث: ٤٧٤٦، ج ٤، ص ١٨٣.

2..... فردس الاخبار بما ثور الخطاب، أم سعد، الحديث: ٢٥٣٨، ج ٢، ص ١٠١.

फ़िरिशते की निदा

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान सौरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفِي** इर्शाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने एक हवा पैदा फ़रमाई है जो स-हरी के वक़्त चलती है और उस वक़्त ज़िक्रे इलाही में मगन और गुनाहों से मुआफ़ी मांगने में मशगूल खुश नसीबों की आवाज़ों को रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में पेश करती है।”

आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने येह भी इर्शाद फ़रमाया कि “रात शुरू होने पर एक फ़िरिशता अर्श के नीचे से येह निदा देता है : अब इबादत गुज़ारों को उठ जाना चाहिये..... तो इबादत गुज़ार खड़े हो जाते हैं..... और जितनी देर **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** चाहता है, नवाफ़िल अदा करते हैं..... फिर जब आधी रात गुज़र जाती है..... तो फ़िरिशता दोबारा निदा करता है : **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के फ़रमां बरदारों को उठ जाना चाहिये..... तो इत्ताअत गुज़ार अपने बिस्तरों से उठ कर सहर तक इबादत में मशगूल रहते हैं..... और जब सहर का वक़्त होता है..... तो फ़िरिशता एक बार फिर निदा देता है : अब **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह से मग़िफ़रत चाहने वालों को भी उठ जाना चाहिये..... तो ऐसे खुश नसीब उठ जाते हैं और अपने रब्बे ग़फ़ार **عَزَّوَجَلَّ** से मग़िफ़रत त़लब करना शुरूअ कर देते हैं..... और जब फ़ज़्र का वक़्त शुरूअ हो जाता है तो फ़िरिशता पुकारता है : ऐ ग़ाफ़िलो ! अब तो उठ जाओ..... तो ऐसे लोग अपने बिस्तरों से यूं उठते हैं जैसे मुर्दे हों जिन्हें उन की क़ब्रों से निकाल कर फेला दिया गया है।”

ऐ लख्ने जिगर !

हज़रते सय्यिदुना लुक्मान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَنَّان** की नसीहतों में येह भी है कि आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने अपने बेटे से इर्शाद फ़रमाया : “ऐ नूरे

नज़र ! कहीं मुर्ग़ तुझ से ज़ियादा अक्ल मन्द साबित न हो कि वोह तो सुब्ह सवेरे उठ कर अज़ान दे (अपने परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** को याद करे) और तू (ग़फ़लत में) पड़ा सोता रह जाए ।”(1)

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा है :

لَقَدْ هَتَفْتُ فِي جُنْحِ لَيْلِ حَمَامَةٍ عَلَى فَنٍّ وَهَنًا وَإِنِّي لَنَائِمٌ
كَذَبْتُ وَبَيَّتَ اللَّهُ لَوْ كُنْتُ عَاشِقًا لَمَاسَبَقْتَنِي بِالْبُكَاءِ الْحَمَائِمُ
وَأَزْعَمُ إِنِّي هَائِمٌ ذُو صَبَابَةٍ لِرَبِّي فَلَا أَبْكِي وَتَبْكِي الْبَهَائِمُ

तरजमा : (1)..... रात को फ़ाख़्ता शाख़ पर बैठी आवाज़ें लगाती है और मैं ख़्वाबे ग़फ़लत का शिकार हूं ।

(2)..... अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! मैं अपने दा'वए इश्क़ में झूटा हूं । अगर मैं अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का सच्चा अ़शिक़ होता तो फ़ाख़्ताएं रोने में मुझ से सबक़त न ले जातीं ।

(3)..... और मेरा गुमाने फ़ासिद था कि मैं अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से ख़ूब महबूबत करने वाला हूं । हाए अफ़सोस ! कि जानवर भी रोते हैं और मैं महबूबते इलाही का दा'वेदार हो कर भी नहीं रोता ।(2)

इताअत व इबादत की हक़ीक़त

ऐ प्यारे बेटे !

इल्म का हासिल येह है कि तुम्हें मा'लूम हो जाए कि इताअत व इबादत क्या है ?

याद रखो कि अवामिर व नवाही (या'नी फ़र्ज़ व वाजिब और ह़राम व मक़रूह) में अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की

1.....الجامع لاحكام القرآن، سورة آل عمران، تحت الآية: १७، ج ३، ص ३१.

2.....ديوان الحماسة، باب النسيب، الجزء २، ص २३२.

इत्तिबाअ करने का नाम इताअत व इबादत है ख्वाह उन का तअल्लुक गुफ्तार से हो या किरदार से..... या'नी तुम्हारा कुछ बोलना या न बोलना और कुछ करना या न करना सब कुछ शरीअत के मुताबिक होना चाहिये..... म-सलन अगर तुम ईदुल फ़ित्र के दिन या अय्यामे तशरीक (या'नी 10, 11, 12, 13 जुल हिज्जतिल ह़राम) में रोज़े रखोगे तो गुनाहगार होगे..... या ग़स्ब शुदा कपड़ों में नमाज़ पढ़ोगे तो गुनाहगार होगे..... हालां कि रोज़ा हो या नमाज़ इबादत ही है (मगर शरीअत ने इस अन्दाज़ में इन की इजाज़त नहीं दी) ।

ऐ लख्ते जिगर !

अल गरज़ तुम्हारे कौल व फ़े'ल को शरीअत के मुताबिक होना चाहिये..... क्यूं कि जो इल्मो अमल शरीअत के मुताबिक न हो गुमराही है..... और (नाम निहाद) सूफ़ियों की ताम्मात⁽¹⁾ व शतहि़य्यात⁽²⁾ से धोका न खाना..... इस लिये कि सुलूक की मन्ज़िलें तो नफ़्स की लज़्ज़तों और ख्वाहिशात को मुजा-हदे की तलवार से काटने से तै होती हैं न कि (इन नाम निहाद सूफ़ियों की) बे सरो पा और फुज़ूल बक्वास से

1..... ताम्मात से मुराद नाम निहाद सूफ़ियों की वोह तावीलात हैं जो वोह बिगैर किसी शर-ई दलील के करते हैं ।

2..... यहां हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي नाम निहाद सूफ़ियों की शरीअत से टकराने वाली बातों से बचने की नसीहत फ़रमा रहे हैं : म-सलन उन का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ इश्क़ व महब्वत के लम्बे चोड़े दा'वे करना और येह कहना कि वोह विसाल इलल हक़ के मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं वगैरा वगैरा । शतहि़य्यात दर हकीकत सूफ़ियों की एक इस्तिलाह है । जिस का इस्ति'माल गुमराह लोगों में आ़म हो चुका है । हालां कि ऐसी बातें चन्द सच्चे सूफ़ियों से भी मरवी हैं । लेकिन उन्हों ने येह बातें आलमे मदहोशी में कीं और होश में आने के बा'द उन से ज़िक्र किया गया तो उन्हों ने खुद भी ऐसी बातों का न सिर्फ़ इन्कार किया बल्कि तौबा व इस्तिग़फ़ार भी किया है । चुनान्वे, सूफ़ियों के हां इस्ति'माल होने वाली मुख़्तलिफ़ इस्तिलाहात बयान करते हुए.....

(क्यूं कि अल्लाह ﷻ का दोस्त बनने के लिये तुझे पीरे कामिल की तरबियत के मुताबिक मुजा-हदा करना पड़ेगा। जब कि किसी बे अमल सूफी की शो'बदा बाजियों से मु-तअस्सिर हो कर इसे अपनी काम्याबी और मन्जिल तक रसाई के लिये काफी क़रार देना सिवाए बे वुकूफी के कुछ नहीं) और इस बात को भी ब ख़ूबी समझ ले ! ज़बान का बेबाक होना और दिल का ग़फ़लत व शहवत से भरा होना और दुन्यावी ख़यालात ही में डूबा रहना शकावत व बद बख़्ती की अलामत है। जब तक नफ़्स की ख़्वाहिशात को कामिल मुजा-हदा व रियाज़त से ख़त्म नहीं करेगा उस वक़्त तक तेरे दिल में मा'रिफ़त के अन्वार नहीं जग-मगाएंगे।



....हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي अपनी किताब “मा'मूलातिल अबरार” में लिखते हैं कि सहव (होशियारी) व सुक्र (मदहोशी) सूफ़ियाए किराम की येह दो मशहूर कैफ़िय्यात हैं। अक्सर सूफ़िया तो ऐसे गुज़रे हैं कि मा'रिफ़ते इलाही व विसाले हकीकी की दौलत से मालामाल होने के बा'द उन को मिन जानिबिल्लाह ऐसे वसीअ ज़र्फ़ से नवाज़ा गया कि कैफ़िय्यात व अहवाल से मग़लूब हो कर दामने होशो ख़िरद, उन के हाथ से नहीं छूटा और उन की बेदारी व होशियारी में एक लम्हे के लिये भी फुतूर नहीं पैदा हुवा। येह लोग “अरबाबे सहव” कहलाते हैं और बा'ज़ वोह मशाइख़ हैं जो बादए इरफ़ाने इलाही से इस द-र-जए मख़मूर व सरशार हो जाते हैं कि ग-ल-बए अहवाल व कैफ़िय्यात में दामने अक्लो होश तार तार कर देते हैं और दुन्याए बेदारी व होशियारी से बेज़ार हो कर मस्ती व मदहोशी के आलम में रहते हैं। इन बुजुर्गों को “अरबाबे सुक्र” के नाम से याद किया जाता है। इन्ही मुअख़िबुरुज़्ज़िक्र बुजुर्गों से कभी कभी आलमे सुक्र व मस्ती में बिला इख़्तियार बा'ज़ ऐसे कलिमात सरज़द हो जाते हैं जो ब ज़ाहिर ख़िलाफ़े शरीअत होते हैं, ऐसे ही कलिमात व मक़ालात को इस्तिलाहे सूफ़िया में “शतहिय्यात” कहते हैं। वोह बुजुर्ग जिन से शतहिय्यात सरज़द हुई बहुत क़लील ता'दाद में हुए हैं और येह भी रिवायत है कि शतहिय्यात सरज़द होने के बा'द जब उन के होशो ह्वास बजा हुए हैं तो उन्होंने ने न सिर्फ़ उन अक्वाल से ला इल्मी का इज़हार किया है बल्कि इज़हारे बेज़ारी व इस्तिग़फ़ार भी किया।

(मा'मूलातिल अबरार, स. 83, जमाले करम, लाहोर)

बा'जु बातें ज़बान से बयान नहीं हो सकतीं ऐ प्यारे बेटे !

तुम ने बा'जु ऐसे मसाइल मुझ से दरयाफ़्त किये हैं जिन का जवाब तहरीरी और ज़बानी तौर पर पूरी तरह बयान नहीं हो सकता..... अगर तुम इस मर्तबे पर फ़ाइज़ हुए तो खुद ही उन की हकीक़त जान लोगे..... और अगर ऐसा न हो सका तो उन का जानना मुहाल है..... क्यूं कि उन का तअल्लुक ज़ौक से है और हर वोह शै जिस का तअल्लुक ज़ौक से हो उसे ज़बानी बयान नहीं किया जा सकता..... जैसे मीठी चीज़ की मिठास और कड़वी चीज़ की कड़वाहट को सिर्फ़ चख़ कर ही जाना जा सकता है ।

मन्कूल है कि किसी नामर्द ने अपने दोस्त को तहरीर किया कि वोह उसे मुजा-म-अत की लज़ज़त से आगाह करे..... तो उस के दोस्त ने जवाबन लिखा कि मैं तो तुझे सिर्फ़ नामर्द समझता था अब मा'लूम हुवा कि नामर्द होने के साथ साथ तू बे वुकूफ़ भी है..... क्यूं कि इस की लज़ज़त का तअल्लुक तो ज़ौक से है अगर तू कुव्वते मुजा-म-अत पर कादिर हो गया तो इस की लज़ज़त से भी आशना हो जाएगा वरना इसे बयान नहीं किया जा सकता ।

ऐ लख्ते जिगर !

तुम्हारे बा'जु मसाइल तो इसी किस्म के हैं जैसा कि अभी मैं ने बयान किया लेकिन बा'जु मसाइल ऐसे भी हैं जिन का जवाब दिया जा सकता है..... और हम ने उन मसाइल को अपनी किताब “एहयाउल उलूम” वगैरा में तफ़्सील के साथ ज़िक्र कर दिया है..... अलबत्ता यहां हम उन में से कुछ का ज़िक्र करते हैं और बा'जु की जानिब इशारा करते हैं ।

सालिक के लिये ज़रूरी बातें

सालिक (मुरीद) के लिये 4 बातें ज़रूरी हैं ।

- ﴿1﴾ ऐसा सहीह अक्कीदा अपनाना जिस में बिद्अत शामिल न हो ।
- ﴿2﴾ ऐसी सच्ची तौबा करना कि फिर गुनाहों की तरफ़ न पलटे ।
- ﴿3﴾ जो नाराज़ हैं उन्हें राज़ी रखना ताकि इस पर किसी का कोई हक़ बाक़ी न रहे ।
- ﴿4﴾ इतना इल्मे दीन हासिल करना कि **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** के अहकामात को बेहतर तरीक़े से अदा कर सके नीज़ इस क़दर इलूमे आख़िरत का हुसूल भी ज़रूरी है जो नजात का बाइस बन सके ।

चार हज़ार अहदीस में से सिर्फ़ एक

हज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي** ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने 400 उ-लमाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام** की ख़िदमत में रह कर 4 हज़ार अहदीसे मुबा-रका पढ़ीं और फिर उन में से सिर्फ़ एक हदीस शरीफ़ को मुन्तख़ब किया और उस पर अमल करने लगा क्यूं कि मैं ने उस हदीसे पाक में ग़ौरो फ़िक़र किया तो अज़ाब से छुटकारा और अपनी नजात व काम्याबी और इलूमे अव्वलीनो आख़िरीन को उस में मौजूद पाया । लिहाज़ा उस हदीस शरीफ़ को अमल के लिये काफ़ी समझा और वोह अज़ीमुश्शान हदीसे पाक येह है :

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने किसी सहाबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से इर्शाद फ़रमाया : “ **اعْمَلْ لِدُنْيَاكَ بِقَدْرِ مَقَامِكَ فِيهَا وَاعْمَلْ لِآخِرَتِكَ بِقَدْرِ رِيقَاكَ فِيهَا وَاعْمَلْ لِلَّهِ بِقَدْرِ حَاجَتِكَ إِلَيْهِ وَاعْمَلْ لِلنَّارِ بِقَدْرِ صَبْرِكَ عَلَيْهَا** या'नी : जितना दुन्या में रहना है उतना दुन्या के लिये और जितना अर्सा आख़िरत में रहना है उतना आख़िरत के लिये अमल कर और **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** के लिये अमल (या'नी इबादत) कर

जितना कि तू इस का मोहताज है और दोख़ की आग के लिये इतना अमल (या'नी गुनाह) कर जितना तू बरदाश्त कर सके।”(1)

ऐ नूरे नज़र !

जब तुम इस हृदीसे पाक पर अमल करोगे तो फिर तुम्हें कस्ते इल्म की ज़रूरत ही न रहेगी।

30 सालह दौरे तालिबे इल्मी का खुलासा

अमल का जज़्बा पाने के लिये एक और हिकायत सुनो.....
हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ हज़रते सय्यिदुना शकीक बलखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ के शागिर्द थे। एक दिन उस्ताज़ साहिब ने उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : “आप 30 साल से मेरी सोहबत में हैं। इतने अर्से में क्या हासिल किया ?” तो हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ ने अर्ज़ की : “मैं ने इल्म के 8 फ़वाइद हासिल किये जो मेरे लिये काफ़ी हैं और मुझे उम्मीद है कि इन पर (इख़्लास व इस्तिक़ामत के साथ) अमल की सूरत में मेरी नजात है।” हज़रते सय्यिदुना शकीक बलखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ ने जब उन फ़वाइद के बारे में दरयाफ़्त फ़रमाया तो इन्होंने वोह फ़वाइद यूँ बयान किये :

﴿1﴾..... पहला फ़ाएदा :

मैं ने लोगों को ब नज़रे ग़ौर देखा कि इन में से हर एक का कोई न कोई महबूब व मा'शूक़ है जिस से वोह इश्को महबूबत का दम भरता है..... लेकिन लोगों के महबूब ऐसे हैं कि उन में से कुछ म-रज़ुल मौत तक साथ देते हैं और कुछ क़ब्र तक..... फिर तमाम के तमाम वापस लौट जाते हैं और उसे क़ब्र में तन्हा छोड़ देते हैं और उन में से कोई भी उस के

1..... تفسير روح البيان، سورة ص، تحت الآية: ٢٩، ج ٨، ص ٢٥.

साथ क़ब्र में नहीं जाता..... लिहाज़ा मैं ने ग़ौरो फ़िक्क के बा'द दिल में कहा : बन्दे का सब से अच्छा, महबूब और बेहतरीन दोस्त तो वोह है जो उस के साथ क़ब्र में जाए और वहां की वहशत व घबराहट की घड़ियों में उस का मूनिस और ग़म ख़्बार हो..... तो मुझे सिवाए “नेक आ'माल” के कोई इस क़ाबिल नज़र न आया तो मैं ने नेक आ'माल को अपना महबूब बना लिया ताकि येह मेरे लिये क़ब्र (की तारीकियों) में चराग़ बन जाएं..... वहां मेरा दिल बहलाएं..... और मुझे तन्हा न छोड़ें ।

﴿2﴾..... दूसरा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि लोग अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की जानिब बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं..... तो फिर मैं ने रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़रमाने अज़ीम में गौर किया :

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى
النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۖ فَإِنَّ الْجَنَّةَ
هِيَ الْمَأْوَىٰ ﴿٣٠﴾ (النّزعت: ६०, ६१)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है ।

और मेरा ईमान है कि कुरआने हकीम हक् और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का सच्चा कलाम है..... पस मैं ने अपने नफ़्स की मुखा-लफ़्त शुरू कर दी..... रियाज़त व मुजाहदात की तरफ़ माइल हुवा..... और नफ़्स की कोई ख़्वाहिश पूरी न की यहां तक कि येह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत व फ़रमां बरदारी पर राज़ी हो गया और सरे तस्लीम ख़म कर दिया ।

﴿3﴾..... तीसरा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर आदमी दुन्या का मालो दौलत जम्अ करने और इसे ज़ख़ीरा करने में मशगूल है..... तो मैं ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़रमाने ला ज़वाल में गौर किया :

مَاعِدْكُمْ يَفْقَدُ وَمَاعِدَ اللَّهِ بَاقٍ
(پ ۴، النحل: ۹۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो अल्लाह के पास है हमेशा रहने वाला है।

पस मैं ने जो कुछ जम्अ किया था अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये फु-क़रा व मसाकीन में तक्सीम कर दिया ताकि येह रब्बे करीम के पास ज़ख़ीरा हो जाए (और मुझे आख़िरत में इस से फ़ाएदा पहुंचे)।

﴿4﴾..... चौथा फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि बा'ज लोगों के नज़्दीक शानो शौकत और इज़्ज़तो शराफ़त कौमों और क़बीलों की कसरत (या'नी ज़ियादा होने) में है। लिहाज़ा वोह ऐसी कौम व क़बीले से तअल्लुक रखने पर खुद को मुअज़्ज़ज व मुक़र्रम समझते हैं..... बा'ज का गुमान येह है कि इज़्ज़त और शानो शौकत दौलत की फ़रावानी और कसरते अहलो इयाल में है। ऐसे लोग अपनी दौलत और औलाद पर फ़ख़्र करते हैं..... बा'ज लोग ऐसे हैं जो अपनी इज़्ज़तो शराफ़त दूसरों का माल लूटने, इन पर जुल्म करने और इन का खून बहाने में समझते हैं..... बा'ज लोग समझते हैं कि माल ज़ाएअ करने और इसराफ़ व फुज़ूल खर्ची ही में इज़्ज़त व बुजुर्गी पोशीदा है..... फिर मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने जीशान में गौर किया :

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاهُ
(پ २६، الحجرات: १३)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक अल्लाह के यहां तुम में ज़ियादा इज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।

तो मैं ने तक्वा और परहेज़ गारी को इख़्तियार किया और पुख़्ता यकीन रखा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम हक़ और सच है..... और लोगों के गुमान व न-ज़रिय्यात सब झूटे और बातिल हैं।

﴿5﴾..... पांचवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि लोग एक दूसरे की बुराई बयान करते हैं और ख़ूब

गीबत का शिकार होते हैं..... इस के अस्बाब पर गौर किया तो मा'लूम हुवा कि येह सब हसद की वजह से हो रहा है..... और इस हसद की अस्ल वजह शानो अज़मत, मालो दौलत और इल्म है तो मैं ने कुरआने करीम की इस आयते मुबा-रका में गौर किया :

نَحْنُ قَسَائِبُهُمْ مَعِيشَتِهِمْ فِي
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا (پ २०، الزخرف: ३२)

तर-ज-मए कञ्जुल ईमान : हम ने इन में इन की जीस्त का सामान दुन्या की जिन्दगी में बांटा ।

तो मैं ने इस बात को ब खूबी जान लिया कि मालो दौलत, शानो अज़मत की तक्सीम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अज़ल ही से फ़रमा दी है (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस के लिये जो चाहा मुक़द्दर फ़रमा दिया) इस लिये मैं किसी से हसद नहीं करता..... और रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की तक्सीम व तक्दीर पर राज़ी हूँ ।

﴿6﴾..... छटा फ़ाएदा :

मैं ने लोगों पर निगाह डाली तो उन्हें एक दूसरे से किसी गरज़ और सबब की वजह से अ़दावत व दुश्मनी करते हुए पाया..... और मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस मुक़द्दस फ़रमान में ख़ूब गौर किया :

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوا
عَدُوَّهُ (پ २२، فاطر: ६)

तर-ज-मए कञ्जुल ईमान : बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो ।

तो मुझे मा'लूम हो गया कि सिवाए शैतान के किसी और से दुश्मनी दुरुस्त नहीं ।

﴿7﴾..... सातवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर शख्स रोज़ी और मआश की तलाश में काफ़ी मेहनत और कोशिश के साथ सरगर्दा है..... और इस सिल्लिसले में हलाल

व हुराम की भी तमीज़ नहीं करता..... बल्कि मश्कूक और हुराम कमाई के हुसूल के लिये ज़लीलो ख़्वार हो रहा है..... लिहाज़ा मैं ने रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़रमाने अली में गौर किया :

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا (پ ۱۲، مؤد: ۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़क अल्लाह के ज़िम्माए करम पर न हो ।

पस मैं ने यकीन कर लिया कि मेरा रिज़क अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने अपने ज़िम्माए करम पर ले रखा है..... तो मैं अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की इबादत में मशगूल हो गया..... और ग़ैर के ख़याल को अपने दिल से निकाल दिया ।

﴿8﴾ आठवां फ़ाएदा :

मैं ने देखा कि हर शख्स किसी न किसी पर भरोसा किये हुए है..... किसी का भरोसा दिरहमो दीनार पर है..... किसी का मालो सल्तनत पर..... किसी का सन्अत व हिफ़त पर..... और कोई तो अपने जैसे लोगों पर भरोसा किये हुए है..... तो मुझे अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के इस फ़रमाने अलीशान से रहनुमाई हासिल हुई :

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا (پ ۲۸، الطلاق: ۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करने वाला है बेशक अल्लाह ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है ।

पस मैं ने अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** पर भरोसा किया..... वोह मुझे काफ़ी है..... और वोह बेहतरीन कारसाज़ है ।

जब हज़रते सय्यिदुना शकीक बल्ख़ी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَي** ने येह 8 फ़वाइद सुने तो इर्शाद फ़रमाया : ऐ हातिम ! अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** आप को

(इख़लास व इस्तिक्कामत के साथ) इन पर अमल करने की तौफ़ीक़ से मालामाल फ़रमाए..... मैं ने तौरात, इन्ज़ील, ज़बूर और कुरआने मजीद की ता'लीमात में ग़ौर किया तो इन तमाम मुक़द्दस किताबों को इन 8 फ़्वाइद पर मुश्तमिल पाया..... तो जिस खुश नसीब ने इन पर अमल किया गोया उस ने इन चारों किताबों पर अलम किया ।

मुर्शिद की अहम्मिय्यत व ज़रूरत

ऐ लख्ते जिगर !

इन दोनों हिकायतों से तुम ने जान लिया होगा कि तुम्हें ज़ियादा और ग़ैर ज़रूरी इल्म की ज़रूरत नहीं (बल्कि अमल की ज़रूरत है)..... अब मैं तुम्हें उन उमूर से आगाह करता हूँ कि राहे हक़ के सालिक (या'नी चलने वाले) पर कौन सी बातें लाज़िम हैं ।

येह बात ज़ेहन नशीन कर लो कि सालिक को रहनुमाई और तरबियत करने वाले एक शैख़ (या'नी मुर्शिदे कामिल) की ज़रूरत होती है..... ताकि वोह अपनी खुसूसी तरबियत से मुरीद के बुरे अख़्लाक़ को जड़ से ख़त्म कर दे और उन की जगह अच्छे अख़्लाक़ का बीज बो दे..... तरबियत की मिसाल बिल्कुल इस तरह है जिस तरह एक किसान खेती बाड़ी के दौरान अपनी फ़सल से ग़ैर ज़रूरी घास और जड़ी बूटियां निकाल देता है..... ताकि फ़सल की हरयाली और नश्वो नमा में कमी न आए..... इसी तरह राहे हक़ के सालिक के लिये एक ऐसे मुर्शिदे कामिल का होना निहायत ही ज़रूरी है जो इस की अहूसन तरीक़े से तरबियत करे..... और अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के रास्ते की तरफ़ इस की रहनुमाई करे..... रब्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** ने अम्बिया व रसूल **عَلَيْهِمُ السَّلَام** को इस लिये मब्क़ुस फ़रमाया ताकि वोह लोगों को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का रास्ता बताएं..... मगर जब आख़िरी रसूल, हुज़ूर खा-तमुन्नबिय्यीन

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस जहान से पर्दा फ़रमा गए (और नबुव्वत व रिसालत का सिलसिला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त्म हुवा) तो इस मन्सबे जलील को खु-लफ़ाए राशिदीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ ने बतौरै नाइब संभाल लिया..... और लोगों को राहे हक़ पर लाने की सअय व कोशिश फ़रमाते रहे ।

पीरे कामिल का आलिम होना जरूरी है :

याद रहे कि हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाइब होने के लिये “पीरे कामिल” का आलिम होना शर्त है..... लेकिन इस बात का ख़याल रहे कि हर आलिम हुजूर ताजदारे दो जहान, मक्की म-दनी सुल्तान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم का नाइब बनने की सलाहियत नहीं रखता ।⁽¹⁾

1..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 137 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “आदाबे मुर्शिदे कामिल” के सफ़हा 14 ता 16 पर है : सय्यिदी आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा अफ़्रीका में तहरीर फ़रमाते हैं कि मुर्शिद की दो किस्में हैं : «1» मुर्शिदे इत्तिसाल «2» मुर्शिदे ईसाल । «1» मुर्शिदे इत्तिसाल या'नी जिस के हाथ पर बैअत करने से इन्सान का सिलसिला हुजुरे पुरनूर सय्यिदुल मुर-सलीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो जाए इस के लिये चार शराइत हैं : पहली शर्त : मुर्शिद का सिलसिला बि इत्तिसाले सहीह (या'नी दुरुस्त वासितों के साथ तअल्लुक) हुजुरे अक्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم तक पहुंचता हो । बीच में मुन्क़तअ (या'नी जुदा) न हो कि मुन्क़तअ के ज़रीए इत्तिसाल (या'नी तअल्लुक) ना मुम्किन है..... बा'ज़ लोग बिला बैअत (या'नी बिगैर मुरीद हुए), महज़ बजो'मे विरासत (या'नी वारिस होने के गुमान में) अपने बाप दादा के सज्जादे पर बैठ जाते हैं या..... बैअत की थी मगर ख़िलाफ़त न मिली थी, बिला इज़्म (बिगैर इजाज़त) मुरीद करना शुरू कर देते हैं या..... सिलसिला ही वोह हो कि क़त्अ कर दिया गया, उस में फैज़ न रखा गया, लोग बराए हवस उस में इज़्म व ख़िलाफ़त देते चले आते हैं या..... सिलसिला फ़ी नफ़िसही सहीह था मगर बीच में ऐसा कोई शाख़्स वाकिआ हुवा जो ब वज्हे इन्तिफ़ाए बा'ज़ शराइत काबिले बैअत न था..... उस से जो शाख़ चली वोह बीच में मुन्क़तअ (या'नी जुदा) है..... इन तमाम सूरतों में इस बैअत से हरगिज़ इत्तिसाल (या'नी तअल्लुक) हासिल न होगा । (बेल से दूध या बांझ से बच्चा मांगने की मत जुदा है) । दूसरी शर्त : मुर्शिद सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो । बद मज़हब गुमराह का सिलसिला शैतान तक पहुंचेगा न कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ...

पीरे कामिल के 26 अवसाफ़ :

अब हम “पीरे कामिल” की बा’ज अलामात मुख्तसरन जिक्र करते हैं ताकि हर कोई “पीरे कामिल” होने का दा’वा न करे :

﴿1﴾..... “पीरे कामिल” वोही है जिस के दिल में दुन्या की महब्बत और इज्जत व मर्तबे की चाहत न हो । ﴿2﴾..... वोह ऐसे मुर्शिदे कामिल से बैअत हो जो नूरे बसीरत से माला माल हो । ﴿3﴾..... इस का सिल्सिला रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** तक मुत्तसिल और मिला हुवा हो । ﴿4﴾..... नेक आ’माल बजा लाने वाला हो । ﴿5﴾..... रियाजते नफ्स का आदी हो ।

...तक..... आज कल बहुत खुले हुए बद दीनों बल्कि बे दीनों कि जो बैअत के सिरे से मुन्किर व दुश्मने औलिया हैं, मक्कारी के साथ पीरी मुरीदी का जाल फेला रखा है..... होशियार ! खबरदार ! एहतियात् ! एहतियात् ! तीसरी शर्त : मुर्शिद आलिम हो । या’नी कम अज कम इतना इल्म जरूरी है कि बिना किसी इमदाद के अपनी जरूरियात के मसाइल किताब से निकाल सके..... कुतुब बीनी (या’नी मुता-लआ कर के) और अप्वाहे रिजाल (या’नी लोगों से सुन सुन कर) भी आलिम बन सकता है (मतलब येह है कि फारिगुत्तहसील होने की सनद न शर्त है न काफी बल्कि इल्म होना चाहिये)..... इल्मे फिक्ह (या’नी अहकामे शरीअत) इस की अपनी जरूरत के काबिल काफी..... और अकाइदे अहले सुन्नत से लाजिमी पूरा वाकिफ हो..... कुफ्र व इस्लाम, गुमराही व हिदायत के फर्क का खूब आरिफ (या’नी जानने वाला) हो । चौथी शर्त : मुर्शिद फ़ासिके मो’लिन (या’नी ए’लानिया गुनाह करने वाला) न हो । इस शर्त पर हुसूले इत्तिसाल का तवक्कुफे नहीं या’नी हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से तअल्लुक का दारो मदार इस शर्त पर नहीं..... कि फुजूरो फिस्फ़ बाइसे फिस्ख (मन्सूख होने का सबब) नहीं..... मगर पीर की ता’जीम लाजिम है और फ़ासिक की तौहीन वाजिब और दोनों का इज्तिमाअ बातिल (इसे इमामत के लिये आगे करने में इस की ता’जीम है और शरीअत में इस की तौहीन वाजिब है) । ﴿2﴾ मुर्शिदे ईसाल या’नी शराइते मजकूरा (या’नी जिन शराइत का जिक्र किया गया) के साथ (1) मफ़ासिदे नफ्स (नफ्स के फितनों) (2) मकाइदे शैतान (शैतानी चालों) और (3) मसाइदे हवा (नफ्स के जालों) से आगाह हो (4) दूसरे की तरबियत जानता हो (5) अपने मु-तवस्सिल पर शफ़क्ते ताम्मा रखता हो कि इस के उयूब पर इसे मुत्तलअ करे इन का इलाज बताए और (6) जो मुश्किलात इस राह में पेश आएँ उन्हें हल फरमाए ।

(फ़तावा अफ़्रीका, स. 138)

﴿6﴾..... या'नी कम खाने ﴿7﴾..... कम सोने ﴿8﴾..... कम बोलने
 ﴿9﴾..... कस्सते नवाफ़िल ﴿10﴾..... ज़ियादा रोज़े रखने और ﴿11﴾.....
 ख़ूब स-दका व ख़ैरात करने जैसे नेक आ'माल करने वाला हो । ﴿12﴾.....
 नीज़ वोह “पीरे कामिल” अपने शैख़ की कामिल इत्तिबाअ़ के सबब
 सब्र ﴿13﴾..... नमाज़ ﴿14﴾..... शुक्र ﴿15﴾..... तवक्कुल ﴿16﴾.....
 यकीन ﴿17﴾..... सखावत ﴿18﴾..... क़नाअत ﴿19﴾..... त़मानिय्यते
 नफ़्स ﴿20﴾..... हिल्म ﴿21﴾..... तवाज़ोअ़ ﴿22﴾..... इल्म ﴿23﴾.....
 सिद्क़ ﴿24﴾..... वफ़ा ﴿25﴾..... हया और ﴿26﴾..... वक़ार व
 सुकून जैसे पसन्दीदा औसाफ़ का पैकर हो ।

पस जो “पीरे कामिल” इन औसाफ़ से मुत्तसिफ़ हो वोह हुज़ूरे
 पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अन्वारे मुबा-रका में
 से एक नूर बन जाता है और इस क़ाबिल हो जाता है कि उस की इक्त़िदा
 की जाए । ऐसे “पीरो मुर्शिद” का मिलना बहुत ही मुश्किल है..... और
 अगर (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत और) खुश क़िस्मती व सआदत मन्दी
 साथ दे और इन औसाफ़ के हामिल “पीरे कामिल” तक रसाई हो जाए
 और वोह “पीरे कामिल” भी इसे अपने मुरीदों में क़बूल फ़रमा ले.....
 तो अब इस मुरीद के लिये लाज़िमी और ज़रूरी है कि अपने “पीरे
 कामिल” का ज़ाहिर और बातिन हर तरह से अ-दबो एहतिराम बजा
 लाए ।

पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी एहतिराम :

पीरो मुर्शिद का ज़ाहिरी अ-दबो एहतिराम येह है कि
 मुरीद शैख़ से बहूसो मुबा-हसा करे न उस की किसी बात पर
 ए'तिराज़ करे अगर्चे इस के नाक़िस इल्म के मुताबिक़ शैख़ ग़-लती पर
 हो (बस इसे अपनी कम फ़हमी समझे) ।

..... शैख के सामने कुछ बिछा कर न बैठे (कि नुमायां नज़र आए बल्कि इज़्जो इन्किसारी का पैकर बना रहे) । अलबत्ता फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त मुसल्ला बिछा सकता है और नमाज़ से फ़रिग़ होते ही फ़ौरन लिपट दे ।

..... शैख की मौजू-दगी में कस्रते नवाफ़िल से गुरेज़ करे (और पीरे कामिल की सोहबत व ख़िदमत को बहुत बड़ी सअ़ादत समझे) ।

..... शैख के हर हुक्म पर अपनी वुस्अत व ताक़त के मुताबिक़ अमल करे ।

पीरो मुर्शिद का बातिनी एहतिराम :

बातिनी एहतिराम येह है कि सालिक पीरो मुर्शिद की मौजू-दगी में जो बातें सुन कर क़बूल कर ले उन की ग़ैर मौजू-दगी में अपने क़ौल और फ़े'ल से उन का इन्कार न करे वरना मुनाफ़िक़ कहलाएगा । अगर ऐसा नहीं कर सकता तो बेहतर है कि शैख की सोहबत से कनारा कश हो जाए यहां तक कि इस का ज़ाहिर और बातिन एक हो जाए ।

बद अक़ीदा लोगों की सोहबत से परहेज़ :

सालिक व मुरीद को चाहिये कि बुरे और बद अक़ीदा लोगों की सोहबत से दूर रहे ताकि दिल से शैतान इन्सानों और शैतान जिनों के वस्वसे दूर रहें..... कि शैतान के शर से दिल को पाक रखने का येही तरीक़ा है..... और (मुरीद को चाहिये कि) हर हाल में फ़कीरी को अमीरी पर तरजीह दे ।

तसव्वुफ़ की हक़ीक़त

जान लो ! तसव्वुफ़ की दो अहम ख़स्लतें हैं : (1)..... इस्तिक़ामत (2)..... हुस्ने अख़्लाक़ । पस जिस ने इस्तिक़ामत इख़्तियार की और लोगों से बुर्द-बारी और खुश अख़्लाक़ी से पेश आया तो वोह सूफ़ी है ।

﴿1﴾..... इस्तिक्ामत से मुराद येह है कि नफ़्सानी ख़्वाहिश को अपने ही नफ़्स की (उख़्खी) भलाई के लिये कुरबान कर दे ।

﴿2﴾..... और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से मुराद येह है कि उन पर अपने नफ़्स की ख़्वाहिश और मरज़ी मुसल्लत न करे बल्कि नफ़्स को उन की ख़्वाहिश और मरज़ी के मुताबिक़ चलाए जब तक कि वोह शरीअत की मुखा-लफ़त न करें (क्यूं कि शरीअत की ख़िलाफ़ वर्ज़ी और गुनाह व ना फ़रमानी में मख़लूक की इताअत जाइज़ नहीं) ।

बन्दगी की हकीक़त

ऐ लख़्ते जिगर !

तुम ने मुझ से बन्दगी के मु-तअल्लिक़ भी दरयाफ़्त किया है तो जान लो कि बन्दगी तीन चीज़ों का नाम है :

﴿1﴾..... अहक़ामे शरीअत की पाबन्दी करना ।

﴿2﴾..... अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की तक्सीम और तक्दीर पर राज़ी रहना ।

﴿3﴾..... रिज़ाए रब्बुल अनाम की त़लब में अपनी खुशी कुरबान कर देना ।

तवक्कुल की हकीक़त

तुम्हारा एक सुवाल तवक्कुल से मु-तअल्लिक़ है..... तवक्कुल येह है कि तुम इस बात पर पुख़्ता यकीन रखो कि अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने जो वा'दा फ़रमाया है या'नी जो कुछ तुम्हारे मुक़्दर में लिख़ दिया है वोह हर हाल में तुम्हें मिल कर रहेगा..... चाहे पूरी दुन्या उस की राह में रुकावट डालने की कोशिश करे..... लेकिन जो तुम्हारी तक्दीर में नहीं लिखा उस (को हासिल करने) के लिये तुम और सारा जहां मिल कर जितनी चाहे कोशिश कर लो तुम्हें उस से कुछ नहीं मिलेगा ।

इख़लास की हकीकत

तुम ने येह भी पूछा है कि इख़लास क्या है ?..... इख़लास येह है कि तुम्हारा हर अमल सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की रिज़ा के लिये हो..... और उस अमल के सबब तुम लोगों की ता'रीफ़ो तौसीफ़ से राहत महसूस करो न ही तुम्हें उन की मज्मूत की परवाह हो ।

रियाकारी और इस का इलाज

याद रखो ! रियाकारी मख़्लूक को बड़ा समझने के सबब पैदा होती है..... इस का इलाज येह है कि तुम लोगों को कुदरते इलाही के सामने मुसख़्ख़र (या'नी ताबेअ) ख़याल करो..... और दिखावे से बचने की खातिर उन्हें जमादात (या'नी पथ्थरो) जैसा समझो कि येह इन की तरह नफ़अ व नुक़सान पहुंचाने पर कादिर नहीं..... क्यूं कि जब तक तुम लोगों को नफ़अ व नुक़सान पर कादिर समझते रहोगे रियाकारी जैसे ख़तरनाक मरज़ से नहीं बच सकते ।

इल्म पर अमल की ब-र-कत

ऐ नूरे नज़र !

तेरे बाकी सुवालात ऐसे हैं जिन में से कुछ के जवाबात हमारी तसानीफ़ (या'नी एहयाउल उलूम और मिन्हाजुल आबिदीन वगैरा) में लिखे हुए हैं..... उन को वहां से तलाश कर लो..... और कुछ सुवाल ऐसे हैं जिन का जवाब लिखना मम्मूअ है..... लिहाज़ा जितना इल्म तुम्हारे पास है उस पर अमल करो ताकि जो नहीं जानते वोह भी तुम पर ज़ाहिर व मुन्कशिफ़ हो जाए..... चुनान्चे,

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने खुशबूदार है कि “**مَنْ عَمِلَ بِمَا عَلِمَ وَرَزَقَهُ اللهُ عِلْمًا مَّا لَمْ يَعْلَمْ**” या'नी : जिस ने अपने इल्म पर अमल

किया अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** उसे वोह इल्म भी अता फ़रमा देगा जो वोह नहीं जानता ।”(1)

ऐ लख्खे जिगर !

आज के बा'द तुम्हें जो भी मुश्किल पेश आए तो मुझ से सिर्फ़ दिल की ज़बान से पूछना..... चुनान्वे, अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ
إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ط
(प २६, الحجرات: ०)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर वोह सब्र करते यहां तक कि तुम आप उन के पास तशरीफ़ लाते तो येह उन के लिये बेहतर था ।

और हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र **عَلَيْهِ السَّلَام** के इस इर्शादि पाक से नसीहत हासिल करो :

فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى أُحْدِثَ
لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۖ (प १०, الكهف: १०)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक मैं खुद उस का ज़िक्र न करूं ।

प्यारे बेटे !

जल्द बाज़ी न करना..... जब मुनासिब वक़्त आएगा सब कुछ तुम पर खोल दिया जाएगा..... और तुम देख लोगे..... चुनान्वे, इर्शादि बारी तअ़ाला है :

سَآوِرِ يَوْمَ الْآزْمَةِ فَلَا تَسْتَعْجِلُونَ ۖ
(प १७, الانبياء: ३७)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अब मैं तुम्हें अपनी निशानियां दिखाऊंगा मुझ से जल्दी न करो ।

लिहाज़ा वक़्त से पहले ऐसे सुवालात मत पूछो !..... और यकीन रखो कि (राहे हक़ पर) चलते रहने से आखिरे कार मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंच ही जाओगे..... चुनान्वे, अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** इर्शाद फ़रमाता है :

1.....حلیة الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، الرقم: ۴۳۲۰ ج ۱، ص ۱۳.

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और क्या
(प २१, रूम: ९) इन्होंने ने ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते ।

ऐ नूरे नज़र !

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** की अज़मत व जलाल की क़सम ! अगर तुम राहे हक़ पर चलते रहे तो हर मन्ज़िल पर अज़ाइबात देखोगे..... और जान व दिल की बाज़ी लगा दो क्यूं कि इस राह की अस्ल जान कुरबान करना ही है..... हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** ने अपने एक शार्गिद से इर्शाद फ़रमाया : “अगर जान की बाज़ी लगाने की हिम्मत है तो (गुरौहे सूफ़िया में) आ जाओ..... वरना सूफ़िया वाली गुमनामी व तर्के दुन्या के मुआ-मले की तरफ़ मत आओ ।

आठ अहम म-दनी फूल

ऐ जाने अज़ीज !

मैं तुम्हें **8** बातों की नसीहत करता हूं इन को क़बूल कर लो कहीं ऐसा न हो कि मैदाने ह़श्र में तुम्हारा इल्म तुम्हारा दुश्मन बन जाए..... इन **8** बातों में से **4** पर अमल करना और **4** को छोड़ देना ।

जिन 4 बातों से दूरी लाज़िम है

﴿1﴾..... पहली नसीहत :

मुना-ज़रे से इज्तिनाब : जहां तक हो सके किसी से किसी मस्अले में मुना-ज़रा (और बहसो मुबा-ह़सा) न करना क्यूं कि इस में बहुत सारी आफ़तें व मुसीबतें हैं..... इस का नुक़सान, फ़ाएदे से ज़ियादा है..... इस लिये कि बहसो मुबा-ह़सा से रिया, तकब्बुर, ह़सद, कीना, बुर्ज़ो अ़दावत, दुश्मनी और फ़ख़्र जैसी मज़मूम और बुरी अ़दात पैदा होती हैं ।

मुना-ज़रे की इजाज़त कब है ?

अगर तुम्हारा किसी शख्स या किसी क़ौम से किसी मस्अले में इख़्तिलाफ़ हो जाए..... और तुम्हारा इरादा हक़ को ज़ाहिर करना हो..... कि ख़ामोश रहने की वजह से कहीं हक़ जाएअ न हो जाए..... तो अब मुना-ज़रे व गुफ़्त-गू की इजाज़त है..... मगर याद रखो कि इरादे और निय्यत के दुरुस्त होने की दो अ़लामात हैं : (1)..... येह फ़र्क़ न करना कि हक़ तुम्हारी ज़बान से ज़ाहिर होता है या किसी दूसरे की । (2)..... कसीर मज्मअ के बजाए तन्हाई में इस मस्अले पर बहस को बेहतर समझना । (और अगर मुआ-मला इस के बर अक्स हो तो यकीन कर लेना कि शैताने लईन इस ब ज़ाहिर नेक काम की आड़ में तुम्हें काफ़ी सारे ख़तरात व मुश्किलात में फंसाना चाहता है) ।

क़ल्बी अमराज़ में मुब्तला मरीज़ :

अब मैं एक बहुत अहम बात बताता हूँ इसे तवज्जोह के साथ सुनो !..... मुश्किलात व मसाइल के बारे में सुवाल करना गोया तबीब के सामने दिल की बीमारी बयान करना है..... और इस का जवाब देना गोया दिल की बीमारी की इस्लाह के लिये कोशिश करना है..... याद रखो कि जाहिल लोग दिल के मरीज़ हैं और उ-लमाए किराम तबीब और हकीम की मानिन्द हैं..... नाक़िस अ़लिम सहीह इलाज नहीं कर सकता और कामिल अ़लिम भी हर मरीज़ का इलाज नहीं करता..... बल्कि उसी मरीज़ का इलाज करता है जिस के बारे में उम्मीदे ग़ालिब हो कि वोह तजावीज़ व इलाज क़बूल करेगा..... और अगर मरीज़ की बीमारी पुरानी और दाइमी हो तो इस का मरज़ इलाज क़बूल नहीं करता..... लिहाज़ा समझदार तबीब वोह है जो इस मौक़अ पर कह दे कि “येह मरीज़ इलाज क़बूल नहीं करेगा”..... क्यूं कि ऐसे को दवा देने में मशगूल होना कीमती उम्र जाएअ करने के मु-तरादिफ़ है ।

जाहिल मरीजों की 4 अक्सांम :

जहालत में मुब्तला मरीजों की 4 किस्में हैं :..... जिन में से एक का इलाज मुम्किन है..... और बाकी 3 ला इलाज हैं ।

❦..... पहला मरीज :

हसद का शिकार : ना काबिले इलाज मरीजों में से पहला मरीज वोह है जिस का सुवाल और ए'तिराज बुग़्जो हसद की गरज से होता है..... तुम जब भी इसे बड़े अच्छे तरीके और निहायत ही फ़साहत व वज़ाहत से जवाब दोगे..... तो तुम्हारे जवाब से इस के बुग़्जो अ़दावत और हसद में मज़ीद इज़ाफ़ा ही होता जाएगा..... लिहाज़ा बेहतरी येही है कि इस का जवाब न दो..... जैसा कि कहा गया है :

كُلُّ الْعَدَاوَةِ قَدْ تُرْجَى إِزَالَتُهَا إِلَّا عَدَاوَةُ مَنْ عَادَاكَ عَنْ حَسَدٍ

तरजमा : हर अ़दावत के ख़ातिमे की उम्मीद की जा सकती है । मगर जिस दुश्मनी की बुन्याद हसद पर हो उस का ख़ातिमा मुम्किन नहीं ।

पस ऐसे मरीज को उस के हाल पर छोड़ दो..... इशादि बारी तअ़ाला है :

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फ़िरा और उस ने न चाही मगर दुन्या की ज़िन्दगी ।

हासिद अपने हर कौल और फे'ल से अपने इल्म की खेती को जलाता है । चुनान्वे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है :

“**الْحَسَدُ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا تَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ**” या'नी : हसद नेकियों को यूं खा जाता है जैसे आग खुश्क लकड़ियों को खा जाती है ।”(1)

1..... سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، الحديث: ٤٢١٠، ج ٤، ص ٧٤٣.

﴿2﴾..... दूसरा मरीज :

हमाक़त का शिकार : ना क़ाबिले इलाज मरीजों में से दूसरा वोह है जिस की बीमारी का सबब हमाक़त हो..... क्यूं कि हमाक़त का इलाज भी मुम्किन नहीं..... जैसा कि हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْ نَبِيِّنَا وَ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का इशदि मुबारक है : “ إِنِّي مَاعَجَزْتُ عَنْ أَحْيَاءِ الْمَوْتَى وَقَدْ عَجَزْتُ مِنْ مُعَالَجَةِ الْأَحْمَقِ ” या’नी : मैं मुर्दों को तो जिन्दा कर सकता हूं मगर अहमक का इलाज नहीं कर सकता ।”..... अहमक इन्सान कुछ अर्सा त-लबे इल्म में मशगूल होता है और चन्द शर-ई और अक्ली उलूम हासिल कर के अपनी हमाक़त के बाइस उन जय्यिद उ-लमाए किराम पर सुवालात व ए’तिराज़ात करने लगता है जिन्हों ने अपनी उंग्रे अज़ीज़ उलूमे शरइय्या व अक्लिय्या की खिदमत में सर्फ़ की होती है ।

हकीक़त से ना आशना येह अहमक गुमान करता है कि “जो बात मैं न समझ सका हर बड़ा आलिम इस के समझने से कासिर है ।”..... पस इस अहमक को जब इतना भी इल्म नहीं तो इस का ए’तिराज़ सरासर हमाक़त व नादानी पर ही मुश्तमिल होगा..... लिहाज़ा बेहतर येही है कि ऐसे शख्स के सुवाल का जवाब न दिया जाए ।

﴿3﴾..... तीसरा मरीज :

कम अक्ली का शिकार : तीसरी किस्म का ला इलाज मरीज वोह है जो हक़ का मु-तलाशी हो..... बुजुर्गों की जिन बातों को समझ नहीं पाता उन को अपनी कोताह फ़हमी का नतीजा क़रार देता है..... और उस का सुवाल सीखने की गरज़ से होता है..... लेकिन कुन्द ज़ेहन और कम अक्ल होने के बाइस हकीक़त जानने की सलाहिय्यत नहीं रखता..... लिहाज़ा ऐसे शख्स को भी जवाब न देने ही में अफ़िय्यत है..... जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे

अफ़लाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने हिदायत निशान है :
 “نَحْنُ مَعَاشِرَ الْأَنْبِيَاءِ أُمَرَاءُ أَنْ نَكَلِّمَ النَّاسَ عَلَى قَدْرِ عُقُولِهِمْ”
 (عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) को हुक्म दिया गया है कि लोगों से उन की अक़्लों के
 मुताबिक़ कलाम करें।”(1)

❖4❖..... चौथा मरीज़ :

नसीहत का तलब गार : चौथी किस्म के मरीज़ का इलाज
 मुम्किन है..... येह ऐसा मरीज़ है जो रुश्दो हिदायत का तलब गार
 हो..... अक़ल मन्द और मुआ-मला फ़हम हो..... हसद और ग़ज़ब व
 गुस्सा उस पर ग़ालिब न हों..... शहवत व नफ़्स परस्ती, जाहो जलाल
 और मालो दौलत की महब्बत से उस का दिल ख़ाली हो..... राहे हक़
 और सीधे रास्ते का त़ालिब हो..... उस का सुवाल और ए'तिराज़ हसद,
 परेशान करने और आज़्माइश की वजह से न हो..... तो ऐसे आदमी का
 मरज़ (या'नी जहालत) काबिले इलाज है..... जाइज़ है कि ऐसे शख़्स के
 सुवाल का जवाब दिया जाए..... बल्कि इस का मस्अला हल करना
 वाजिब है।

वा'जो बयान की हक़ीक़त

❖2❖ दूसरी नसीहत :

जिन 4 बातों से दूर रहना ज़रूरी है उन में से दूसरी येह है कि
 (ख़्वाहिशे नफ़सानी की वजह से) वाइज़ो नासेह बनने से इज्तिनाब करना.....
 क्यूं कि इस में बड़ी आफ़तें और नुक़सान हैं..... हां ! जब अपने कहे पर
 खुद अमल करने लगो तो उस वक़्त लोगों को वा'ज़ कर सकते हो (क्यूं
 कि बा अमल बा असर होता है)..... और ख़ूब ग़ौर करो इस फ़रमाने
 अलीशान में जो हज़रते सय्यिदुना ईसा **عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से फ़रमाया

1.....تفسير السلمي، سورة النحل، تحت الآية: ١٢٥، ج ١، ص ٣٧٧.

गया : “يَا بَنُ مَرْيَمَ اعْظِي نَفْسَكَ فَإِنَّ اتَّعَظْتَ فَعِظَ النَّاسَ وَإِلَّا فَاَسْتَحْيِي مِنْ رَبِّكَ”
इब्ने मरयम ! अपने आप को नसीहत करो । अगर तुम ने नसीहत क़बूल कर
ली तो फिर लोगों को नसीहत करना वरना अपने रब से हया करो ।”(1)

वा'जो नसीहत में दो बातों से परहेज़ :

अगर तुम्हें वा'जो बयान करना ही पड़े तो दो बातों से इज्तिनाब
करना :

﴿1﴾..... पहली बात : वा'जो बयान में खुश कुन इबारात..... बे फ़ाएदा
इशारात..... ग़ैर मुस्तनद वाक़िआत..... और फुज़ूल शे'रो शाइरी के
ज़रीए तसन्नोअ और बनावट से परहेज़ करना..... क्यूं कि अल्लाह
عَزَّوَجَلَّ तसन्नोअ और बनावट से काम लेने वालों को ना पसन्द फ़रमाता
है..... और कलाम में तकल्लुफ़ या नुमूदो नुमाइश का हृद से तजावुज़
करना बातिन के ख़राब होने और दिल की ग़फ़लत पर दलालत करता
है..... बयान का मक्सद (अपनी काबिलियत का इज़हार नहीं बल्कि) येह
है कि सुनने वाला आख़िरत की तकालीफ़ व अज़ाब और अल्लाह
عَزَّوَجَلَّ की इबादत में होने वाली कोताहियां याद करे..... अपनी उम्म के
बेकार कामों में ज़ाएअ होने पर अफ़सोस करे..... और पेश आने वाले
दुश्वार गुज़ार मराहिल के बारे में ग़ौरो फ़ि़क़र करे कि (الْعَبَادُ لِلَّهِ) अगर
ईमान पर ख़ातिमा न हुवा तो क्या बनेगा ?..... म-लकुल मौत (हज़रते
सय्यिदुना इज़राईल) عَلَيْهِ السَّلَام जब रूह क़ब्ज़ फ़रमाएंगे तो हालत कैसी
होगी ?..... क्या मुन्कर नकीर के सुवालों के जवाबात देने की ताक़त व
हिम्मत है ?..... क्या क़ियामत के दिन और ह़शर के मैदान में अपनी
हालत की बेहतरी का एहतिमाम कर लिया है ?..... और क्या पुल
सिरात को आसानी से पार कर लेगा या “हावियह” (या'नी नारे दोज़ख़)

1.....الزهدي امام احمد بن حنبل، من مواظع عيسى، الحديث: ٣٠، ص ٩٣.

में गिर जाएगा ?

अल ग़रज़ बयान सुनने वाले के दिल में बयान कर्दा मुआ-मलात की याद हमेशा आती रहे..... और उसे बे क़रार करती रहे..... तो ऐसे जज़्बात के जोश..... और इन मसाइबो आलाम पर रोने का नाम “बयान” है..... और लोगों को इन मुआ-मलात की तरफ़ तवज्जोह दिलाना..... और उन की कोताहियों पर उन्हें तम्बीह करते हुए उन के ऐबों से उन्हें आगाह करना..... इस तरह हो कि इज्तिमाअ में बैठे लोगों पर रिक्कत तारी हो..... और (क़ब्रो हशर के) येह मसाइबो आलाम उन्हें अफ़सुर्दा व ग़मज़दा कर दें..... ताकि जहां तक हो सके वोह (नेकियां कर के) गुज़री हुई उम्र की तलाफ़ी करें..... और जो अय्याम **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह की ना फ़रमानी में बसर किये उन पर ख़ूब हस्स्तो पशेमानी का इज़हार करें..... इस तरीक़े पर जामेअ कलाम को “वा’ज” कहा जाता है ।

म-सलन : अगर दरिया में तुग़यानी हो और सैलाब का रुख़ किसी के घर की तरफ़ हो..... और इत्तिफ़ाक़ से वोह अपने अहले ख़ाना समेत घर में मौजूद हो..... तो यकीनन तुम येही कहोगे : बचो ! जल्दी करो !..... इन ख़तरनाक लहरों से बचने की कोशिश करो..... और क्या तेरा दिल येह चाहेगा कि इस नाजुक व पुर-ख़तर मौक़अ पर साहिबे ख़ाना को पुर तकल्लुफ़ इबारात..... तसन्नोअ व बनावट से भरपूर निकात और इशारों से ख़बर दे ?..... ज़ाहिर है तू ऐसा कभी नहीं चाहेगा..... (और न ही ऐसी नादानी और बे वुकूफ़ी का मुज़ा-हरा करेगा) पस येही हाल वाइज़ व मुबल्लिग़ का है..... इसे भी चाहिये कि वोह पुर तकल्लुफ़ इबारात और तसन्नोअ व बनावट से परहेज़ करे ।

﴿2﴾..... दूसरी बात : वा’जो बयान करने में हरगिज़ तुम्हारी निय्यत और ख़्वाहिश येह न हो कि लोगों में वाह वाह के ना’रे बुलन्द हों..... इन

पर वज्द की कैफ़ियत तारी हो..... वोह गिरेबां चाक कर दें..... और हर तरफ़ येह शोर हो कि कैसी ज़बर दस्त महफ़िल है..... क्यूं कि ऐसी ख़्वाहिश दुन्या की तरफ़ झुकाव और रियाकारी की अलामत है..... जो हक़ से गाफ़िल होने की वज्द से पैदा होती है..... बल्कि तुम्हारा अज़्मो इरादा येह होना चाहिये कि (तुम अपने वा'जो बयान के ज़रीए) लोगों को दुन्या से आख़िरत की तरफ़ राग़िब कर दो..... गुनाहों से नेकियों की तरफ़..... हिर्सी लालच से जोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) की तरफ़..... बुख़्त व कन्जूसी से सखावत की तरफ़..... दुन्या के धोके से तक्वा व परहेज़ गारी की तरफ़..... (रियाकारी से इख़्लास की तरफ़..... तकब्बुर से अज़िज़ी व इन्क़िसारी की तरफ़..... और ग़फ़लत से बेदारी की तरफ़) माइल करने की कोशिश करो..... उन के दिलों में आख़िरत की महबूबत पैदा कर के दुन्या को उन की नज़रों में हेच (या'नी क़ाबिले नफ़्त) बना दो..... और उन्हें इबादत और जोहद के इल्म से मालामाल कर दो..... क्यूं कि इन्सान की तबीअत में इस बात का ग़-लबा है कि वोह शरीअते मुतहहरा की सीधी राह से फिर कर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की नाराज़ी वाले कामों और बेहूदा आदातो अत्वार में जल्द मशगूल हो जाता है।

लिहाज़ा लोगों के दिलों में ख़ौफ़े खुदा और तक्वा व परहेज़ गारी पैदा करो..... और उन्हें (वक्ते नज़्अ और क़ब्रों आख़िरत में) पेश आने वाले ख़तरात व मुश्किलात से हर मुम्किन तरीक़े से डराने की कोशिश करो..... शायद ऐसा करने से उन के ज़ाहिरी वा बातिनी मुआ-मलात में तब्दीली रूनुमा हो..... और वोह (सच्ची तौबा कर के) **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इबादत व इताअत में शौको रग़बत अपनाएं..... और मा'सियत व ना फ़रमानी से बेज़ारी इख़्तियार करें कि येही वा'जो बयान का तरीक़ा है।

हर वोह वा'जो बयान जिस में येह ख़ूबियां न हों तो वोह वाइज़

व मुबल्लिग़ और सुनने वालों के लिये वबाल का बाइस है..... बल्कि यहां तक मन्कूल है कि ऐसा वाइज़ रंग बदलने वाला जिन्न और शैतान है जो लोगों को सीधी राह से दूर कर के उन्हें हलाकत व रुस्वाई और तबाही व बरबादी के गढ़े में फेंक देता है..... पस लोगों पर लाज़िम है कि वोह ऐसे वाइज़ से दूर भागें क्यूं कि दीन को जितना नुक़सान ऐसे वाइज़ पहुंचाते हैं इतना शैतान भी नहीं पहुंचाता..... लिहाज़ा जो कुदरत व ताक़त रखता हो उस पर लाज़िम है कि वोह ऐसे (फ़ितना व फ़साद फैलाने वाले) वाइज़ को मुसल्मानों के मिम्बर से नीचे उतार दे और उसे ऐसा (वा'जो बयान) करने से रोक दे..... क्यूं कि ऐसा करना भी **أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ** (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ करने) में दाख़िल है।

उ-मरा से मेलजोल का नुक़सान

﴿3﴾..... तीसरी नसीहत :

जिन चार बातों से दूर रहना है उन में से तीसरी येह है कि तुम उ-मरा व सलातीन से मेलजोल रखो न उन को देखो..... क्यूं कि उन की तरफ़ देखना..... उन के पास बैठना..... उन की हम-नशीनी इख़्तियार करना बहुत बड़ी आफ़त है..... और अगर कभी उन के साथ मिल बैठने का इत्तिफ़ाक़ हो तो हरगिज़ हरगिज़ उन की ता'रीफ़ो तौसीफ़ न करना..... इस लिये कि जब किसी ज़ालिम और फ़ासिक़ की ता'रीफ़ की जाती है तो **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** सख़्त नाराज़ होता है..... और जो ज़ालिमों और फ़ासिक़ों की दराज़िये उम्र की दुआ करता है (**نَعُوذُ بِاللّٰهِ**) वोह चाहता है कि ज़मीन पर **अल्लाह عَزَّوَجَلَّ** की ना फ़रमानी हो।

उ-मरा के तोहफ़े या शैतान का वार ?

﴿4﴾..... चौथी नसीहत :

मुमा-न-अत वाली बातों में से आख़िरी येह है कि उ-मरा

(हकिमों और सरदारों) से किसी किस्म के तहाइफ़ व नज़राने क़बूल न करना..... अगर्चे तुम्हें मा'लूम हो कि येह हलाल की कमाई से पेश किये गए हैं..... इस लिये कि ऐसे लोगों से लालच व तमअ रखना दीन में बिगाड़ पैदा करता है..... (इस का नतीजा येह होता है कि) उन के लिये दिल में नर्म गोशा, जुल्म में तआवुन और तरफ़-दारी जैसे जज़्बात पैदा होते हैं..... और येह सब कुछ दीन में बिगाड़ व फ़साद ही तो है..... इस का कम से कम नुक्सान येह है कि जब तुम उन के तहाइफ़ व नज़राने क़बूल करोगे..... और उन के मन्सब से फ़ाएदा उठाओगे तो लाज़िमन उन से महब्बत भी करने लगोगे..... और आदमी जिस से महब्बत करता है उस की दराज़िये उम्र और सलामती व बका भी चाहने लगता है..... और ज़ालिम की सलामती व बका को पसन्द करना दर हकीक़त मख़्लूके खुदा पर जुल्म और दुन्या को बरबाद करने का इरादा है..... लिहाज़ा इस से बढ़ कर दीन और आख़िरत के लिये कौन सी चीज़ नुक्सान देह हो सकती है ?

ख़बरदार ! होशियार ! शैताने लईन व मरदूद के फ़रेब में मत आना..... और न ही उन लोगों के फ़रेब में आना जो कहते हैं कि “इन (उ-मरा) से दिरहमो दीनार ले कर फ़ु-क़रा व मसाकीन में तक्सीम करना बेहतर है क्यूं कि उ-मरा अपना माल ना फ़रमानी और गुनाहों के कामों में ख़र्च करते हैं । लिहाज़ा इसी माल को ग़रीब व नादार मुसल्मानों पर ख़र्च करना इस से कहीं बेहतर है ।”..... शैतान मल्ज़ून इस वार से न जाने कितने लोगों को तबाहो बरबाद कर चुका है..... इस बहस को मज़ीद दीगर आफ़तों की तफ़सील के साथ हम ने “एहयाउल उलूम” में ज़िक्र कर दिया है..... तफ़सील के लिये वहां से देख लो ।

जिन 4 बातों पर अमल करना है अल्लाह तआला से बन्दे का मुआ-मला

﴿5﴾..... पांचवीं नसीहत :

तुम्हारा अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** से मुआ-मला इस तरह होना चाहिये जैसा कि अगर तुम्हारा गुलाम तुम्हारे साथ ऐसा मुआ-मला करता तो तुम उस से खुश हो जाते और इस पर कल्बी नाराजी और गुस्से का इज़हार नहीं करते..... और ऐसा मुआ-मला जो तुम्हारा गुलाम तुम्हारे लिये करे और तुम इस पर राजी नहीं होते तो फिर खुद भी अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के लिये ऐसा मुआ-मला करने पर राजी मत होना जो तुम्हारा मालिके हकीकी है ।

बन्दों से मुआ-मला

﴿6﴾..... छटी नसीहत :

लोगों से तुम्हारा सुलूक वैसा होना चाहिये जैसा तुम चाहते हो कि वोह तुम्हारे साथ करें..... क्यूं कि बन्दे का ईमान उस वक्त कामिल होता है जब वोह तमाम लोगों के लिये वोही कुछ पसन्द करे जो अपनी जात के लिये पसन्द करता है ।

इल्म व मुता-लए की नौइय्यत

﴿7﴾..... सातवीं नसीहत :

जब तुम कोई इल्म हासिल करने लगो या मुता-लआ करना चाहो तो बेहतर है कि तुम्हारा इल्म व मुता-लआ ऐसा हो जो तज़कियए नफ़्स और दिल की इस्लाह का बाइस हो..... जैसे अगर तुम्हें पता चल जाए कि तुम्हारी उम्र का सिर्फ़ एक हफ़ता बाकी है..... तो यकीनन तुम उन अय्याम को फ़िक्ह व मुना-ज़रा, उसूलो कलाम और दीगर इलूम के हुसूल पर हरगिज़ सर्फ़ नहीं करोगे..... क्यूं कि तुम जानते हो कि अब येह इलूम तुम्हें काफ़ी न होंगे..... बल्कि तुम अपने दिल की निगहदाश्त व निगरानी

में मशगूल हो जाओगे..... नफ़्स की सिफ़ात पहचानने और दुनियावी तअल्लुकात से मुंह मोड़ कर अपने नफ़्स को बुरे अख़्लाक़ से पाक करने की कोशिश करोगे..... और अच्छे अख़्लाक़ अपनाते हुए **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह की इबादत व महबूबत से अपना तअल्लुक़ मज़बूत करने की कोशिश करोगे..... और हर दिन और रात (बल्कि हर लम्हा) इस बात का इम्कान मौजूद है कि इस में इन्सान की मौत वाक़ेअ हो जाए ।

नजात का म-दनी नुस्खा

ऐ नूरे नज़र !

अब मेरी एक और बात ग़ौर से सुनो..... और इस में ग़ौरो फ़िक्क़ करो हत्ता कि तुम्हें अपनी नजात का रास्ता मिल जाए..... सोचो ! अगर तुम्हें येह मा'लूम हो जाए कि बादशाहे वक़्त एक हफ़्ते के बा'द तुम से मिलने आ रहा है तो इस अर्से में तुम हर उस जगह की इस्लाह करने में मशगूल हो जाओगे जहां तुम्हारे ख़याल के मुताबिक़ बादशाह की नज़र पड़ सकती है..... म-सलन अपने कपड़ों और बदन की देखभाल और ज़ैबो ज़ीनत पर खुसूसी तवज्जोह दोगे..... और घर की इक इक चीज़ को साफ़ सुथरा और आरास्ता करने की कोशिश करोगे ।

अब ग़ौर करो कि मैं ने किस तरफ़ इशारा किया है..... क्यूं कि तुम बड़े समझदार हो और अक्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी होता है ।

दिलों और निय्यतों पर नज़र :

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने आलीशान है :

اَللّٰهُ : يَا نَبِيَّ إِنَّ اللَّهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صَوْرَتِكُمْ وَلَا إِلَى أَعْمَالِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَيَبْتَكُمُ “
عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी शक्लो सूरत और तुम्हारे आ'माल को नहीं बल्कि तुम्हारे दिलों और तुम्हारी निय्यतों को देखता है ।”⁽¹⁾

1..... صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم..... الخ، الحديث: ٢٥٦٤، ص ١٣٨٧.

कितना इल्म फ़र्ज है ?(1)

अगर तुम अहवालें क़ल्ब (या'नी दिल की हालतों) का इल्म हासिल करना चाहते हो तो “एह्याउल इल्म” और हमारी दीगर तसानीफ़ का मुता-लआ करो..... क्यूं कि येह इल्म तो फ़र्जे ऐन है जब कि दूसरे इल्म फ़र्जे किफ़ाया हैं..... अलबत्ता ! इस क़दर इल्म हासिल करना फ़र्ज है कि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के मुक़रर कर्दा फ़राइज़ और अहक़ाम को कामिल और अच्छे तरीक़े से सर अन्जाम दिया जा सके..... **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें येह इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्हमत फ़रमाए । (आमीन)

1..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 504 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “गीबत की तबाह कारियां” सफ़हा 5 पर शैख़े त्रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरी र-जवी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** तहरीर फ़रमाते हैं : सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहत्तशम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फ़रमाया : “**طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ**” या'नी : इल्म हासिल करना हर मुसल्मान मर्द पर फ़र्ज है ।” (सनن ابن माजह ج 1 ص 146 حديث 224)

यहां स्कूल कॉलेज की दुन्यवी ता'लीम नहीं बल्कि ज़रूरी दीनी इल्म मुराद है । लिहाज़ा सब से पहले बुन्यादी अक़ाइद का सीखना फ़र्ज है, इस के बा'द नमाज़ के फ़राइज़ व शराइत व मुफ़्सिदात, फिर र-मज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी पर फ़र्ज होने की सूरत में रोज़ों के ज़रूरी मसाइल, जिस पर ज़कात फ़र्ज हो उस के लिये ज़कात के ज़रूरी मसाइल, इसी तरह हज़ फ़र्ज होने की सूरत में हज़ के, निकाह करना चाहे तो इस के, ताजिर को ख़रीदो फ़रोख़्त के, नोकरी करने वाले को नोकरी के, नोकर रखने वाले को इजारे के, **وَعَلَى هَذَا الْقِيَاسِ** (या'नी इसी पर कियास करते हुए) हर मुसल्मान अक़िल बालिग़ मर्द व औरत पर उस की मौजूदा हालत के मुताबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज ऐन है । इसी तरह हर एक के लिये मसाइले हलाल व हराम भी सीखना फ़र्ज है । नीज़ मसाइले क़ल्ब (बातिनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया (बातिनी मसाइल) म-सलन अज़िज़ी व इख़्लास और तवक्कुल वग़ैरहा और इन को हासिल करने का तरीक़ा और बातिनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, हसद वग़ैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसल्मान पर अहम फ़राइज़ से है ।

(तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा र-जविय्या, जि. 23, स. 623, 624)

हिर्स व तमअ से दूरी

﴿8﴾..... आठवीं नसीहत :

अपने पास दुन्या का माल सिर्फ इतना जम्अ रखना जो तुम्हें एक साल के अख़राजात व ज़रूरिय्यात के लिये काफी हो..... जैसा कि **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, कासिमे ने'मत, मालिके जन्नत अपनी बा'ज अज़्वाजे मुतहहरात **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ** के लिये ऐसा करते और येह दुआ फ़रमाते : “**اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ قُوَّتَ آلِ مُحَمَّدٍ كَقَاتَا**” या'नी : ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ! आले मुहम्मद (**صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) को ब क़दरे क़िफ़ायत रोज़ी अता फ़रमा।”⁽¹⁾ और आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** तमाम अज़्वाजे मुतहहरात **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ** के लिये नहीं फ़रमाया करते थे..... बल्कि येह एहतियाम उन के लिये फ़रमाते जिन के दिल में कुछ ज़ो'फ़ मुला-हज़ा फ़रमाते..... और जो यकीन के आ'ला द-रजे पर फ़ाइज़ थीं उन के लिये एकआध दिन से ज़ियादा का इन्तिज़ाम कभी न फ़रमाते ।

दुआए खास

प्यारे बेटे !

मैं ने इस रिसाला नुमा मक्तूब में तुम्हारे सुवालों के जवाबात लिख दिये हैं..... अब तुम इन पर अमल करना शुरू कर दो और मुझे अपनी नेक दुआओं में याद रखना..... और तुम ने दुआ के मु-तअल्लिक़ मुझ से पूछा है..... मैं सहीह अदादीसे मुबा-रका से माखूज़ दुआ तुम्हें बताता हूं..... येह दुआ अपने कीमती अवकात बिल खुसूस हर नमाज़ के बा'द मांगा करो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنَ النِّعْمَةِ تَمَامِهَا وَمِنَ الْعِصْمَةِ دَوَامِهَا وَمِنَ الرَّحْمَةِ شَمُولِهَا وَمِنَ الْعَافِيَةِ حُصُولِهَا وَمِنَ الْعِشْرِ ارْغَدَةً وَمِنَ الْعُمْرِ اَسَدَةً وَمِنَ الْاِحْسَانِ اَتَمَّهُ وَمِنَ الْاَنْعَامِ اَعَمَّهُ

1..... صحیح مسلم، کتاب الزهد والرفاق، الحدیث: ۲۹۶۹، ص ۸۸، ۱۰

وَمِنَ الْفَضْلِ اعْذِبْهُ وَمِنَ اللَّطْفِ اقْرُبْهُ. اللَّهُمَّ كُنْ لَنَا وَلَاتَكُنْ عَلَيْنَا. اللَّهُمَّ اخْتِمْ بِالسَّعَادَةِ
 آجَلَنَا وَحَقِّقْ بِالزِّيَادَةِ آمَالَنَا وَاقْرِنْ بِالْعَافِيَةِ عُذُوبَنَا وَاصْلِحْ لَنَا وَاجْعَلْ إِلَى رَحْمَتِكَ مَصِيرَنَا وَمَا لَنَا
 وَاصْبُبْ سَجَالَ عَفْوِكَ عَلَى ذُنُوبِنَا وَمَنْ عَلَيْنَا بِاصْلَاحِ عُيُوبِنَا وَاجْعَلِ التَّقْوَى زَادَنَا وَفِي دِينِكَ
 اجْتِهَادَنَا وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاعْتِمَادُنَا. اللَّهُمَّ ثَبِّتْنَا عَلَى نَهْجِ الْإِسْتِقَامَةِ وَاعِزَّنَا فِي الدُّنْيَا مِنْ
 مُوْجِبَاتِ السَّامَةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَخَفِّفْ عَنَّا ثِقْلَ الْأَوْزَارِ وَارْزُقْنَا عَيْشَةَ الْأَبْرَارِ وَافْعَلْ مَا نَشَاءُ
 شَرَّ الْأَشْرَارِ وَاعْتِقْ رِقَابَنَا وَرَقَابَ آبَائِنَا وَمَهَاتِنَا وَخَوَانِنَا وَخَوَانِنَا وَمَشَايِخِنَا مِنَ النَّارِ بِرَحْمَتِكَ يَا
 عَزِيزُ يَا غَفَّارُ يَا كَرِيمُ يَا سَتَّارُ يَا حَلِيمُ يَا جَبَّارُ يَا اللَّهُ يَا اللَّهُ يَا اللَّهُ بِرَحْمَتِكَ يَا رَحِمَ الرَّاحِمِينَ وَ
 يَا أَوَّلَ الْأَوَّلِينَ وَيَا آخِرَ الْآخِرِينَ وَيَا ذَا الْقُوَّةِ الْمَتِينِ وَيَا رَاحِمَ الْمَسْكِينِ وَيَا رَحِمَ الرَّاحِمِينَ لَا
 إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ.

या'नी : ऐ **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कामिल ने'मत..... दाइमी इस्मत (या'नी हमेशा की पाक दामनी) और ऐसी रहमत का जो मेरे तमाम उमूर व मुआ-मलात को शामिल हो..... और तुझ से दाइमी खैरो आफ़ियत..... खुशहाल ज़िन्दगी..... सआदतों से भरपूर लम्बी तवील उम्र..... कामिल व मुकम्मल एहसान..... हर हाल में इन्आमो इक्राम..... फज़्लो करम..... और ऐसा लुत्फ़ो अता मांगता हूं जो मुझे तेरी बारगाह के मज़ीद क़रीब कर दे ।

❁..... ऐ **عَزَّوَجَلَّ** अल्लाह ! हमारी मदद फ़रमा..... हर नुक़सान से महफूज़ो मामून फ़रमा..... हमें सआदत व आफ़ियत की मौत अता हो..... हमारी उम्मीदें पूरी फ़रमा बल्कि उम्मीदों से बढ़ कर अता फ़रमा..... हमारी सुब्हो शाम आफ़ियत से हम-कनार फ़रमा..... हमारा अन्जाम व इख़िताम अपनी रहमत की जानिब फ़रमा..... हमारे गुनाहों की सियाही पर अपनी मग़फ़रत की बारिश बरसा दे..... हमारे ऐबों की इस्लाह फ़रमा कर हम पर एहसान फ़रमा..... तक्वा व परहेज़ गारी हमारा जादे राह बना दे..... तेरे दीन की सर

बुलन्दी के लिये हमारी हर कोशिश क़बूल फ़रमा..... तुझी पर हमारा भरोसा है..... और तू ही हमारा सहारा है ।

❁..... ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें राहे इस्तिक़ामत पर साबित क़दम रखना..... रोज़े हशर शरमिन्दगी का बाइस बनने वाले आ'माल से बचा..... गुनाहों का बोझ हलका फ़रमा..... नेक लोगों जैसी ज़िन्दगी अता फ़रमा..... अपने सिवा किसी का मोहताज न करना..... बुरे लोगों के शर से बचा ।

❁..... ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हमें, हमारे आबाओ अज्दाद, हमारी माओं, बहनों, भाइयों और हमारे मशाइख़े उज़्ज़ाम व असातिज़ए किराम को जहन्नम की आग से महफूज़ फ़रमा.....

..... يَا عَزِيزُ يَا غَفَّارُ يَا كَرِيمُ يَا سَتَّارُ يَا عَلِيمُ يَا جَبَّارُ
يَا اللَّهُ ! يَا اللَّهُ ! يَا اللَّهُ ! بِرَحْمَتِكَ يَا رَحِمَ الرَّاحِمِينَ

❁..... ऐ हर अव्वल से पहले !..... ऐ हर आख़िर के बा'द मौजूद रहने वाले !..... ऐ ताक़त व कुव्वत वाले ! ऐ मिस्कीनों पर इनायतें करने वाले !..... ऐ सब रहम करने वालों से ज़ियादा रहम फ़रमाने वाले !.....

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ -

وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ



माخذ و مراجع

کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۰ھ
ترجمہ قرآن کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۴۰ھ	ضیاء القرآن پبلشرز لاہور
تفسیر روح البیان	علامہ اسماعیل حق بنی بروسی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
الجامع لاحکام القرآن	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تفسیر السلسلی	ابو عبد الرحمن محمد بن الحسین سلمیٰ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۱۲ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل لبخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۲ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ ۱۴۲۰ھ
المسند	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۲ھ
الزهد	امام احمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار الغد الجدید ۱۴۲۶ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابونعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
فردوس الاخبار	حافظ شیروہ بن شہر دار بن شیروہ دیلمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
دیوان الحماسہ	ابی تمام حبیب بن اوس طائی متوفی ۲۳۱ھ	لاہور پاکستان



غناہوں سے نپڑت کرنے کا جہن

“دا’وتے इस्लामी” के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क्वाफिलों में सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी (इस्लामी) माह की पहली तारीख़ अपने यहां के (दा’वते इस्लामी के) जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा’मूल बना लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नपڑत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।

تخایج ایہا الولد

- (۱).....تفسیر روح البیان، سورۃ البقرۃ، تحت الایۃ: ۲۳۲، ج ۱، ص ۳۶۳۔
- (۲).....شعب الایمان للبیہقی، باب فی نشر العلم، الحدیث: ۱۷۷۸، ج ۲، ص ۲۸۵۔
- (۳).....صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب دعاؤکم ایمانکم، الحدیث: ۸، ج ۱، ص ۱۲۔
- (۴).....سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (ت ۹۰)، الحدیث: ۲۲۶۷، ج ۴، ص ۲۰۸۔
- (۵).....تفسیر روح البیان، سورۃ البقرۃ، تحت الایۃ: ۲۲۶، ج ۱، ص ۳۸۳۔
- (۶).....تفسیر روح البیان، سورۃ الرعد، تحت الایۃ: ۲۲۶، ج ۴، ص ۳۸۸۔
- (۷).....سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (ت ۹۰)، الحدیث: ۲۲۶۷، ج ۴، ص ۲۰۸۔
- (۸).....صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب مناقب سعد بن مُعاذ، الحدیث: ۳۸۰۳، ج ۲، ص ۵۶۰۔
- (۹).....حلیۃ الاولیاء، سلام بن ابی مطیع، الرقم: ۸۳۰۱، ج ۶، ص ۲۰۳۔
- (۱۰).....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحدیث: ۱۱۲۹۵، ج ۴، ص ۶۹۔
- (۱۱).....صحیح مسلم، کتاب فضائل الصحابة، باب من فضائل عبد اللہ بن عمر، الحدیث: ۲۴۷۹، ص ۱۳۲۶۔
- (۱۲).....شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعدید نعم اللہ وشکرہا، فصل فی النوع وآدابہ، الحدیث: ۲۷۶۶، ج ۴، ص ۱۸۳۔
- (۱۳).....فردس الاخبار، مآثور الخطاب، أم سعد، الحدیث: ۲۵۳۸، ج ۲، ص ۱۰۱۔

- (१३).....الجامع لاحكام القرآن، سورة آل عمران، تحت الآية: ١٤، ج ٣، ص ٣١۔
- (١٥).....ديوان الحماسة، باب النسب، الجزء ٢، ص ٢٣٢۔
- (١٦).....تفسير روح البيان، سورة ص، تحت الآية: ٢٩، ج ٨، ص ٢٥۔
- (١٧).....حلية الاولياء، احمد بن ابى الحوارى، الرقم: ١٢٣٢٠، ج ١٠، ص ١٣۔
- (١٨).....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحسد، الحديث: ٢٢١٠، ج ٢، ص ٤٢٣۔
- (١٩).....تفسير السلمي، سورة النحل، تحت الآية: ١٢٥، ج ١، ص ٣٤٤۔
- (٢٠).....الزهد للإمام احمد بن حنبل، من مواعظ عيسى، الحديث: ٣٠٠، ص ٩٣۔
- (٢١).....صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب تحريم ظلم المسلم.....الخ،
الحديث: ٢٥٦٢، ص ١٣٨٤۔
- (٢٢).....صحيح مسلم، كتاب الزهد والرفائق، الحديث: ٢٩٦٩، ص ١٥٨٨۔
- (٢٣).....سنن الترمذی، كتاب العلم، باب ماجاء فى فضل الفقه، الحديث: ٢٦٩٢، ج ٢،
ص ٣١٢۔
- (٢٤).....سنن الترمذی، كتاب العلم، باب ماجاء فى فضل الفقه، الحديث: ٢٦٩٠، ج ٢،
ص ٣١٢۔
- (٢٥).....صحيح مسلم، كتاب الذکر والدعاء، باب التعوذ من شر، الحديث: ٢٤٢٢، ص ١٢٥٤۔



اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اَيُّهَا الْمَوْلُوْنَ الْكَافِرُوْنَ اَلْحَقُّ بِرَبِّهِمْ اَللّٰهُمَّ اَرْسِلْهُمُ

सुन्नत की बहारें

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्आरात इशा की नमाज के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। अशिक़ने रसूल के म-दनी काफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक़े मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि “मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ” अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये म-दनी काफ़िलों में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



मक-त-बतुल मदीना (हिन्द) की मुख्तलिफ़ शाखें

- वेहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया मज़ल, जामेअ मस्जिद, देहली -6 ☎ 011-23284560
- अहमदआबाद :- फैज़ाने मदीना, जी कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात ☎ 9327168200
- मुम्बई :- फैज़ाने मदीना, ग्राउंड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खडक, मुम्बई, महाराष्ट्र ☎ 09022177997
- हैदराबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, फ़ानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना ☎ (040) 2 45 72 786